जे.टी.डी.सी.एल द्वारा प्रकाशित

जोहार झारखण्ड

प्रकृति का छुपा गहना...

विशेषांक

झारखण्ड के पर्यटक स्थलों की

मिथक-किंवदंति

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

THE TERRACOTTA TEMPLES OF MALUTI, JHARKHAND

Maluti is a little, unassuming village located about 50 km from the town of Dumka in Jharkhand. For those interested in medieval architecture, it is a treasure trove. For, the village is home to 72 - originally 108 - terracotta temples. Most of the temples, said to be constructed by architects from Bengal, are based on the char-chall (four sloping roots) form of architecture, and are dedicated to several gods and goddesses, especially local divinities. The temples, some of which feature elaborate terracotta designs depicting montages from hindu epics, are said to have been built during the reign of the Baaj Basanta dynasty, which ruled the region around 300 years ago. The biggest attraction is the temple dedicated to Mauliksha, believed to be the elder sibling of goddess Tara of Tarapith. The deity does not possess a body; it is simply a red-coloured stone head fixed to the wall of the temple.

DEPARTMENT OF TOURISM

GOVERNMENT OF JHARKHAND
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
Website : www.jharkhandtourism.gov.in | www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment
www.twitter.com/visitjharkhand

सम्पादकीय

देश के मंदिर, तीर्थ स्थान और पुराने किलों से कई तरह की किवदंती जुड़ी है। झारखंड भी इससे अलग नहीं है। यहां भी मौजूद तीर्थ स्थलों और पुराने किलों को लेकर कई तरह की किवदंतियां प्रचलित है। यहां स्थित तीर्थ स्थानों से भगवान राम, श्रीकृष्ण, शिवशंकर से लेकर रावण तक की कथाएं जुडी हुई है। कहा जाता है कि भगवान राम को जूठा बैर खिलाने वाली शबरी का आश्रम यहीं था। वनवास के दौरान राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ आए थे। पौराणिक कथा के मुताबिक बुद्ध भी झारखंड की धरती पर आ चुके हैं। राजाओं के किलों को लेकर भी कई कहानियां लोग सुनाते हैं।

एक किले के बारे में कहा जाता है कि एक क्रांतिकारी का श्राप उसपर पड़ा है। इसके कारण साल दर साल उसपर ठनका गिरता है। इसकी वजह से किला अब पूरी तरह ध्वस्त होने की स्थिति में आ गया है। देश में कहीं भी खंडित शिवलिंग की पूजा नहीं होती है। हालांकि झारखंड के एक मंदिर में खंडित शिवलिंग की भी पूजा होती है। इससे भी एक किवदंती जुडी है। झारखंड अपने प्राकृतिक सुंदरता और नेमत के लिए तो जाना ही जाता है। ऐसी किवदंतियों के तौर पर भी इसकी अलग पहचान है। झारखंड के भगवान बिरसा मुंडा सहित कई अन्य महापुरूषों की याद झारखंड से जुडी है। वैसे, इस बार का अंक किवदंतियों पर ही आधारित है। आशा है यह विशेषांक आपको पसंद आएगा।

प्रधान सम्पादक
– संजीव कुमार बेसरा, भा.प्र.से.
प्रबंध निदेशक, जे.टी.डी.सी.एल.

संरक्षक
डॉ मनीष रंजन (भा.प्र.से.)
सचिव, पर्यटन, कला-संस्कृति,
खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक
संजीव कुमार बेसरा (भा.प्र.से.)
निदेशक पर्यटन एवं एम.डी.
जे.टी.डी.सी.एल.

संपादक
राजीव रंजन
महाप्रबंधक, जे.टी.डी.सी.एल.

सम्पादकीय सलाहकार
अमित गुप्ता

सह-सम्पादकीय सलाहकार
कुमार राजेश

आलोक प्रसाद, डी.जी.एम.,
झारखण्ड पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, रांची द्वारा प्रकाशित

विषय-सूची

3 इटखोरी मंदिर
5 टांगीनाथ धाम
6 देवड़ी मंदिर
7 बैद्यनाथ धाम
10 जगन्नाथ मंदिर
12 बेतला राष्ट्रीय उद्यान
15 बाबा बंशीधर मंदिर
16 पहाड़ी मंदिर
18 मां छिन्नमस्तिके मंदिर
20 मैथन डैम
23 मलूटी
24 टैगोर हिल
25 रामरेखा धाम
27 पलामू किला
28 मैकलुस्कीगंज
29 राजमहल
30 तिलैया डैम
32 कैथा प्राचीन मंदिर
34 मसानजोर
35 नेतरहाट
36 महादेवशाल
37 पालकोट
38 सारंडा
40 आंजन धाम
41 पुराना जेल
42 रातु पैलेस
43 राजा जगतपाल का किला
44 बासुकीनाथ
45 भोगनाडीह
46 दलमा
48 शिवगादी मंदिर
49 जीईएल चर्च
50 टूटी झरना
52 बोकारो कुंड
53 हवामहल
54 त्रिकुट पहाड़
55 ध्वजाधारी धाम
56 हरिहर धाम
56 हरिहर धाम

इटखोरी मंदिर
तीन धर्मों का संगम स्थल

झारखण्ड के चतरा में इटखोरी मंदिर स्थित है। यह पहाड़ और जंगलों से घिरा एवं महानद नदी (महाने) के तट पर स्थित इटखोरी ब्लॉक मुख्यालय के भद्रकाली परिसर से केवल आधा किलोमीटर दूर है। यहां एक जलाशय है, जिसमें अपनी खुद की प्राकृतिक सुंदरता है। लोग 'बिशुआ' पर अपनी शाश्वत सुंदरता को देखने के लिए एकत्र होते है। स्नान और सूरज ध्यान का आनंद लेते हैं।

इटखोरी का मां भद्रकाली मंदिर परिसर तीन धर्मों का संगम स्थल है। सनातन, बौद्ध एवं जैन धर्म का यहां समागम हुआ है। प्रागैतिहासिक काल से इस पवित्र भूमि पर धर्म संगम की अलौकिक भक्ति धारा बहती चली आ रही है। सनातन धर्मावलंबियों के लिए यह पावन भूमि मां भद्रकाली तथा सहस्र शिवलिंग महादेव के सिद्ध पीठ के रूप में आस्था का केंद्र है। बौद्ध के लिए भगवान बुद्ध की तपो भूमि के रूप में आराधना और उपासना का स्थल है। शांति की खोज में निकले युवराज सिद्धार्थ ने यहां तपस्या की थी। उस वक्त उनकी माँ उन्हें वापस ले जाने आई थी। लेकिन जब सिद्धार्थ का ध्यान नहीं टूटा तो उनके मुख से इतखोई शब्द निकला, जो बाद में इटखोरी में तब्दील हुआ।

जैन धर्मावलंबियों ने जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर भगवान शीतल नाथ स्वामी की जन्म भूमि की मान्यता दी है। प्राचीन काल में तपस्वी मेघा मुनि ने अपने तप से इस परिसर को सिद्ध करके सिद्धपीठ के रूप में स्थापित किया था। भगवान राम के वनवास तथा पांडवों के अज्ञातवास की पौराणिक धार्मिक कथाओं से मां भद्रकाली मंदिर परिसर का जुड़ाव रहा है। पुरातात्विक दृष्टिकोण से भी मंदिर परिसर काफी महत्वपूर्ण है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की खुदाई के दौरान कई पुरातात्विक तथ्य सामने आए हैं। पुरातत्व विभाग ने यहां नौवीं–दसवीं शताब्दी काल में मठ–मंदिरों के निर्माण की पुष्टि की है। इसके प्रमाण मंदिर के म्यूजियम में पुरावशेषो के रूप में सहेज कर रखे हुए हैं।

मां भद्रकाली की प्रतिमा बेशकीमती काले पत्थर को तराश कर बनाई गयी है। करीब पांच फुट ऊंची आदमकद प्रतिमा चतुर्भुज है। प्रतिमा के चरणों के नीचे ब्राम्ही लिपि में अंकित है कि प्रतिमा का निर्माण नौवीं शताब्दी काल में राजा महेन्द्र पाल द्वितीय ने कराया था।

यहां का सहस्र शिवलिंग काफी अनूठा है। एक ही पत्थर को तराश कर बनाए गये सहस्र शिवलिंग में 1008 शिवलिंग उत्कीर्ण है। सहस्र शिवलिंग का जलाभिषेक करने पर एक साथ सभी एक हजार आठ शिवलिंग का जलाभिषेक होता है। सहस्र शिवलिंग मंदिर के सामने ही नंदी की विशालकाय प्रतिमा भी स्थापित है। मंदिर परिसर में ही एक प्राचीन कनुनिया माई का मंदिर है। एक शिला में सूरज, चांद के साथ त्रिशुल उत्कीर्ण है। इसी शिला में नर व नारी की भी प्रतिमा उत्कीर्ण है। पुरातत्व विभाग इसे सती स्तंभ बताता है।

मंदिर परिसर में एक अदभूत बौद्ध स्तूप है। इसे मनौती स्तूप भी कहा जाता है। बौद्ध स्तूप में भगवान बुद्ध की 1004 छोटी व चार बड़ी प्रतिमाएं बनी हुई है। भगवान बुद्ध की एक प्रतिमा महापरायण की मुद्रा में भी है। इस स्तूप को पुरातत्व विभाग ने नौवीं शताब्दी काल का बताया है। वैसे किंवदंती है कि सम्राट अशोक ने जिन चौरासी हजार स्तूपों का निर्माण कराया था उनमें यह स्तूप भी शामिल है। इस स्तूप के उपरी हिस्से में पानी का संग्रह होना आश्चर्य के साथ खोज का भी विषय है।

मंदिर के म्यूजियम में जैन धर्म के दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ स्वामी का एक चरण चिन्ह है। यह चरण चिन्ह वर्ष 1983 में ग्रामीणों द्वारा खुदाई के दौरान प्राप्त हुआ था। उस वक्त एक तांब्र पत्र भी मिला था। जिसमें ब्राह्मी लिपि में जैन धर्म के दसवीं तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ स्वामी का जन्म स्थान इस स्थल को बताया गया है। वर्तमान समय में जिला प्रशासन ने शीतलनाथ तीर्थ क्षेत्र समिति को ढ़ाई एकड़ भूमि मंदिर, धर्मशाला के निर्माण के लिए प्रदान की है।

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

JHARKHAND

TOURISM
A New Experience

Jharkhand, a scenic splendour with dense forests, inviting hills and verdant hillocks, flowing streams and majestic waterfalls, wildlife sanctuaries and parks, grassy meadows, afresh after spate of Monsoon rains invite you to date nature.

Unbelievably attractive and unarguably authentic pasts, the State offers cultural roots and long tradition that bind its past with present. Winter onset beginning with Durga Puja festivities is the ideal time to visit the state enjoying its rich bio-diversity, moderate climate, rich cultural and historical heritage, and an array of holy places for religious tourism and ethnic aspects makes Jharkhand an ultimate tourist destination for various interest groups including spiritual, industrial and adventure tourists alike. Its culturally rich heritage is vibrant as reflected in the diversity of languages, spoken, festivals celebrated and the presence of a variety of folk music, dances, paintings, crafts and other traditions of performing arts.

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi-834004
Secretary Ph.:0651-2400981, Fax : 0651-2400982

Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph.:0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email ID : jtdcltd@gmail.com

www.jharkhandtourism.gov.in

jharkhandtourismdepartment
visitjharkhand

मीरा शर्मा

भगवान परशुराम का फरसा है टांगीनाथ धाम में

झारखण्ड में गुमला शहर से करीब 75 किलोमीटर की दूरी पर बसा है टांगीनाथ धाम। यहां से भगवान परशुराम का गहरा नाता है। अभी भी परशुराम का फरसा (टांगी) वहां की जमीन में गड़ा हुआ है। झारखण्ड में फरसा को टांगी कहा जाता है, इसलिए इस स्थान का नाम टांगीनाथ धाम पड़ गया। स्थानीय लोगों की मानें तो धाम में आज भी भगवान परशुराम के पद चिह्न मौजूद हैं। टांगीनाथ धाम में परशुराम ने तपस्या की थी।

प्रचलित कथा के अनुसार भगवान राम के मां सीता के लिये आयोजित स्वयंवर में भगवान शिव का धनुष तोड़ देने पर परशुराम बहुत क्रोधित होते हुए वहां पहुंचते हैं। राम को शिव का धनुष तोड़ने के लिए भला–बुरा कहते हैं। सब कुछ सुनकर भी राम मौन रहते हैं। यह देख कर लक्ष्मण को क्रोध आ जाता है। वे परशुराम से बहस करने लग जाते हैं। इसी बहस के दौरान जब परशुराम को यह ज्ञात होता है कि राम भी भगवान विष्णु के ही अवतार है तो वे बहुत लज्जित होते हैं। वहां से निकलकर पश्चाताप करने के लिये घने जंगलों के बीच आ जाते हैं। यहां वे भगवान शिव की स्थापना कर और बगल में अपना फरसा गाड़ कर तपस्या करते हैं। यहीं जगह आज का टांगीनाथ धाम है।

यहां पर गड़े लोहे के फरसे की अलग विशेषता है। हजारों सालों से खुले में रहने के बावजूद इसमें जंग नहीं लगा है। यह जमीन में कितना नीचे तक गड़ा है, इसकी कोई जानकारी नहीं है। कहा जाता है कि एक बार क्षेत्र में रहने वाले लोहार जाति के कुछ लोगों ने लोहा प्राप्त करने के लिए फरसे को काटने प्रयास किया था। वे फरसे को तो नहीं काट पाये, लेकिन उनकी जाति के लोगों को इसकी कीमत चुकानी पड़ी। वे अपने आप मरने लगे। इसके डर से लोहार जाति ने क्षेत्र छोड़ दिया। आज भी धाम से 15 किलोमीटर की परिधि में लोहार जाति के लोग नहीं बसते हैं।

टांगीनाथ में स्थित प्रतिमाएं उत्कल के भुवनेश्वर, मुक्तेश्वर व गौरी केदार में प्राप्त प्रतिमाओं से मेल खाती है। वर्ष 1989 में पुरातत्व विभाग ने टांगीनाथ धाम मे खुदाई की थी। इसमें उन्हें सोने–चांदी के आभूषण सहित अनेक मूल्यवान वस्तुएं मिली थी। कुछ कारणों से यहां पर खुदाई बंद कर दी गई। फिर कभी यहां पर खुदाई नहीं हुई। खुदाई में हीरा जड़ित मुकुट, चांदी का अर्धगोलाकार सिक्का, सोने का कड़ा, कान की सोने की बाली, तांबे की बनी टिफीन आदि वस्तुएं मिली थी। टिफीन में काला तिल व चावल रखा था।

प्राचीन देवड़ी मंदिर की कहानी

मीरा शर्मा

झारखण्ड की राजधानी रांची टाटा रोड पर तमाड़ से तीन किलोमीटर दूर स्थित है प्राचीन देवड़ी मंदिर। रांची से इसकी दूरी करीब 60 किलोमीटर है। इसकी पहचान देश–विदेश में है। इस मंदिर में एक 16 भुजी मूर्ति है, जो सोलहभुजी देवी के नाम से प्रख्यात है। प्रचलित प्राचीन कथा के अनुसार केरा (सिंहभूम) के एक मुंडा राजा ने अपने दुश्मन से पराजित होने के बाद वापस लौटते समय देवड़ी में जाकर शरण ली थी।

यहां मां दशभुजी का आह्वान कर उसकी मूर्ति स्थापना की थी। आह्वान के बाद उक्त मुंडा राजा ने अपने दुश्मन को पराजित कर अपना राज्य वापस ले लिया था। इस मंदिर को बनाने में पत्थरों को काट कर बिना जोड़े हुए एक दूसरे के ऊपर रखा गया है। ऐसी भी मान्यता है कि सम्राट अशोक इस देवी के दर्शन के लिए आते थे। काला पहाड़ ने इस मंदिर को ध्वस्त करने की चेष्टा की थी. किन्तु उसे सफलता नहीं मिली थी। साल 1831–32 के कोल आंदोलन के समय उद्दंड अंग्रेज अधिकारियों ने इस मंदिर पर गोलियां चलाई थीं, जिसके चिन्ह अभी भी हैं।

लोगों के मुताबिक इस मंदिर के अंदर की पुरानी बनावट की तस्वीर लेने की हर कोशिश असफल होती है। कई लोगों ने इसकी तस्वीर लेने की कोशिश की। सभी धुंधली आई। अलग–अलग फॉर्मेट में लेने के बाद भी कोई साफ नहीं आई।

देवड़ी मंदिर में बड़े–बड़े लोग माथा टेकने आते हैं। इसमें खिलाड़ी से लेकर फिल्म स्टार तक शामिल हैं। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के बार–बार यहां पहुंचने से यह मंदिर काफी प्रसिद्ध हो गया है। यहां इंडियन क्रिकेट टीम के हरभजन सिंह, शिखर धवन व उनकी पत्नी आयशा और लालू प्रसाद यादव भी दर्शन के लिए आ चुके हैं। फिल्मी स्टार और गायक में रवि किशन, कैलाश खेर भी शामिल हैं।

टीम से फुर्सत मिलते ही धोनी हमेशा पत्नी साक्षी और परिवार के सदस्यों के साथ मंदिर आते रहते हैं। ऐसा माना जाता है कि धोनी किसी सीरीज के शुरू होने से पहले यहां आते हैं। जीवन का अच्छा दौर हो या बुरा, धोनी कभी भी अपनी 'सोलहभुजी देवी' मां को नहीं भूलते। धोनी साक्षी के साथ शादी करने के बाद आशीर्वाद लेने इस मंदिर में आए थे।

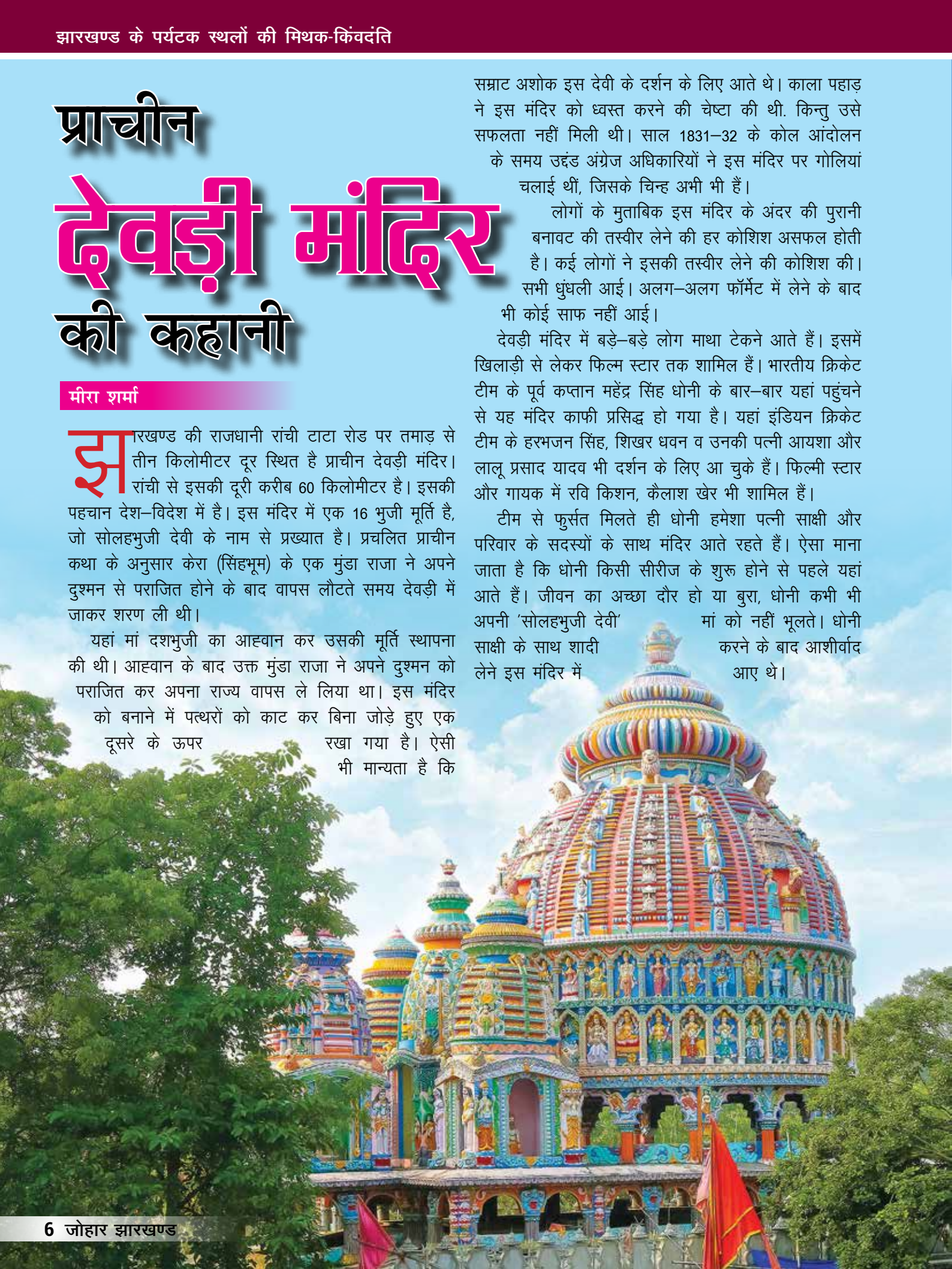

बैद्यनाथ धाम : रावण से जुड़ी है कथा

हिंदू धर्म में बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का बड़ा महत्व है। इन सभी से शिव की रोचक कथाएं जुड़ी हुई हैं। देवघर के वैद्यनाथ धाम में स्थापित 'कामना लिंग' भी रावण की भक्ति का प्रतीक है। बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक पवित्र वैद्यनाथ शिवलिंग झारखंड के देवघर में स्थित है। इस जगह को लोग बाबा बैजनाथ धाम के नाम से भी जानते हैं। ऐसा माना जाता है कि भोलेनाथ यहां आने वाले की सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। इसलिए इस शिवलिंग को 'कामना लिंग' भी कहते हैं।

यहां स्थापित ज्योतिर्लिंग के बारे में भगवान शिव के भक्त रावण और बाबा बैजनाथ की कहानी बड़ी निराली है। पौराणिक कथा के अनुसार दशानन रावण भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय पर तप कर रहा था। वह एक–एक करके अपने सिर काटकर शिवलिंग पर चढ़ा रहा था। नौ सिर चढ़ाने के बाद वह 10वां सिर काटने वाला था तभी भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिए। उससे वर मांगने को कहा।

तब रावण ने 'कामना लिंग' को लंका ले जाने का वरदान मांग लिया। रावण के पास सोने की लंका के अलावा तीनों लोकों में शासन करने की शक्ति तो थी। उसने कई देवता, यक्ष और गंधर्वो को कैद कर के भी लंका में रखा हुआ था। इस वजह से रावण ने ये इच्छा जताई कि भगवान शिव कैलाश को छोड़ लंका में रहें। महादेव ने उसकी इस मनोकामना को शर्त के साथ पूरा किया। उन्होंने कहा कि अगर तुमने शिवलिंग को रास्ते में कही भी रखा तो मैं फिर वहीं रह जाऊंगा। नहीं उठूंगा। रावण ने शर्त मान ली।

इधर भगवान शिव की कैलाश छोड़ने की बात सुनते ही सभी देवता चिंतित हो गए। इस समस्या के समाधान के लिए सभी भगवान विष्णु के पास गए। भगवान विष्णु ने वरुण देव को आचमन के जरिए रावण के पेट में घुसने को कहा। इसलिए जब रावण शिवलिंग को लेकर श्रीलंका की ओर चला तो देवघर के पास उसे लघुशंका लगी।

ऐसे में रावण एक चरवाहे को शिवलिंग देकर लघुशंका करने चला गया। कहते हैं उस बैजू नाम के चरवाहे के रूप में भगवान विष्णु थे। इसके कारण यह तीर्थ स्थान बैजनाथ धाम के नाम से जाना जाता है। पौराणिक ग्रंथों के मुताबिक रावण कई घंटो तक लघुशंका करता रहा, जो आज भी एक तालाब के रूप में देवघर में है। इधर अत्यधिक भारी लगने के कारण बैजू ने शिवलिंग धरती पर रख दिया।

जब रावण लौट कर आया तो लाख कोशिश के बाद भी शिवलिंग को उठा नहीं पाया। तब उसे भी भगवान की यह लीला समझ में आ गई। वह क्रोधित होकर शिवलिंग पर अपना अंगूठा गढ़ाकर चला गया। उसके बाद ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने आकर उस शिवलिंग की पूजा की। शिवजी का दर्शन होते ही सभी देवी देवताओं ने शिवलिंग की उसी स्थान पर स्थापना कर दी। शिव–स्तुति करके वापस स्वर्ग को चले गए। तभी से महादेव 'कामना लिंग' के रूप में देवघर में विराजते हैं।

EXPERIENCE JHARKHAND!

This land of forests is the ultimate destination for nature lovers, wifdlije enthusiasts and those who want to expfore the rich ancient culture of tribals and religious sites with historical significance. Come to jharkhand to experience nature in all its elegance.

Parasnath Mountain Peak

Maa Deori Temple

Ranchi Lake

Tribal dance of Jharkhand

Hirni Falls

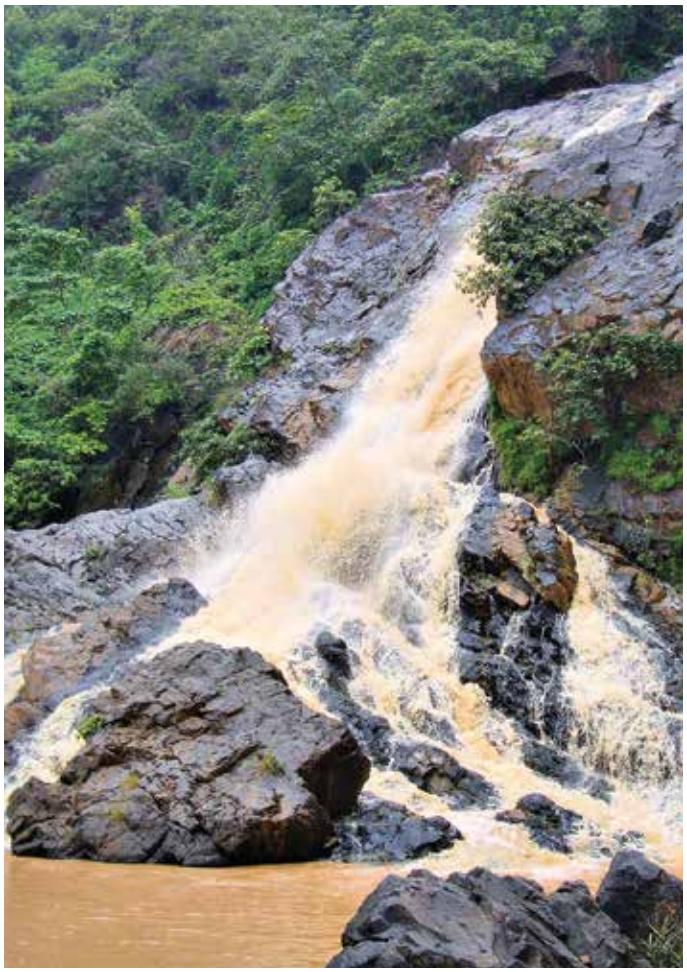

Tagore Hill

Hirni Falls

Travel to West Singhbhum to watch the Ramgarha plunging down 37 m at the edges of the Ranchi plateau as Hirni falls. One can enjoy complete view of the falls, the dense forest and caves from a tower located there.

Tagore Hill

The Tagore Hill also known as Morabadi Hill is situated in Morabadi, Ranchi, Jharkhand. It's a place of attraction for Jharkhand tourism due to its connection with great poet Rabindra Nath Tagore.

Tribal Dance

Adivasis are born dancers and singers. Both men and women sway to the tune of indigenous musical instruments whenever there is a get–together.

Ranchi Lake

Located at the base of majestic Ranchi hill, this vast lake was excavated in 1842 by a British national. It is an ideal spot for unwinding and vacationing away from the hustle and bustle of city life.

Parasnath Mountain Peak

Parasnath is a mountain peak in the Parasnath Range. It is located towards the eastern end of the Chota Nagpur Plateau in the Giridih district of the Indian state of Jharkhand.

Maa Dewri Temple

Dewri Mandir is a very old temple of Goddess Durga. The main attraction is the idol having 16 Hands.

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment | www.twitter.com/visitjharkhand

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

सपना आने पर बना

जगन्नाथ मंदिर

झारखण्ड की राजधानी रांची से 10 किलोमिटर की दूरी पर दक्षिण पश्चिम में स्थित है जगन्नाथ मंदिर। इस मंदिर का वास्तुशिल्प और सजावट भी पुरी के जगन्नाथ मंदिर से मिलता जुलता है। सबसे खास बात है कि इन ऊंचे पहाड़ों पर हरियाली के बीच स्थित यह मंदिर अपने साथ एक मनोरम छटा समेटे है। इसका निर्माण वर्ष 1691 में बड़कागढ़ के नागवंशी राजा ठाकुर एनी नाथ शाहदेव ने कराया था। यहां प्रत्येक वर्ष भव्य रथयात्रा होता है। मेला एक सप्ताह से अधिक दिन चलता है। इसमें रांची और आसपास के जिलों से हजारों लोग आते हैं। मेले से पूरे इलाके में रौनक रहती है।

प्रचलित कथा के मुताबिक राजा एनीनाथ शाहदेव के सपने में खुद भगवान जगन्नाथ दर्शन दिये। उन्होंने रांची में भगवान जगन्नाथ मंदिर की स्थापना करने को कहा। मंदिर के पहाड़ पर होने के बाद में ऊपर में कई हरे पेड़ हैं। तब से लेकर आज तक भगवान जगन्नाथ का मेला लगता है। हजारों की भीड़ भगवान के रथ को खींचते के लिए जुटती है। जय जगन्नाथ के उद्घोष के साथ पूजा मनाया जाता है।

अमर विश्वनाथ शाहदेव के उत्तराधिकारी लाल प्रवीण शाहदेव कहते हैं कि राजा एनीनाथ शाहदेव चाहते थे कि उनकी प्रजा यहां की भी भूमि पर भगवान जगन्नाथ स्वामी के दर्शन करें। इसलिये राजा पैदल चलकर पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर गए। कुछ समय वहां बिताने के बाद उन्हें स्वप्न में खुद भगवान जगन्नाथ ने दर्शन दिए। रांची में भगवान जगन्नाथ मंदिर की स्थापना करने को कहा। वहां से वापस रांची लौटने के बाद धुर्वा स्थित ऊंचे पहाड़ पर इस मंदिर की स्थापना की।

यहां हर साल जुलाई में पुरी की तरह ही रथ यात्रा निकाली जाती है। रथ यात्रा के दौरान यहां का नजारा बेहद ही विहंगम होता है। पुरी की तर्ज पर ही यहां रथ यात्रा निकाली

जाती है। आस पास के लोगों के अलावा देश विदेश से भी लोग भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। मंदिर के पुजारी कहते हैं कि मौसी बाड़ी में भगवान के चले जाने के बाद वहां भक्तों की भीड़ उमड़ती है। मान्यता है कि इस वक्त दर्शन से विशेष फल की प्राप्ति होती है। रथ यात्रा के साथ भव्य मेला का आयोजन होता है। मेले में झूलों और पारंपरिक मिठाइयों के साथ गांव देहात की चीजों जैसे हंसुआ, सील लोढ़ी, मछली का जाल, ठेकुआ/पिड़किया का सांचा, दलघोटनी, कड़ाह आदि की खरीदारी के लिए लोग यहां पहुंचते हैं। रथ यात्रा से महीनों पहले यहां मेले की तैयारी शुरू हो जाती है। रथ यात्रा की शुरुआत होने से पहले ही श्रद्धालुओं का आना शुरू हो जाता है। रथ यात्रा में शामिल होने से लेकर रथ पर सवार भगवान के दर्शन तक के लिए श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ता है।

बाघों से पलामू की पहचान

पलामू की पहचान बाघों से रही है। एक जमाने में दूर दराज के शिकारी बाघों का शिकार करने के लिये यहां आते थे। जानकारों की माने तो अंग्रेजों के समय में सबसे अधिक बाघों का शिकार हुआ। उस वक्त तो बाघ का शिकार करने वालों को इनाम भी दिया जाता था। हर बाघ के शिकार पर डालटनगंज के कचहरी पर शिकारी को 25 रुपये का इनाम दिया जाता था। तब यह राशि का मोल बहुत अधिक था। आजाद भारत में भी बाघों को मारने का सिलसिला जारी रहा। वर्ष 1951 से 1970 तक अंधाधुंध बाघों का शिकार किया गया। वर्ष 1970 में बाघों की गिनती कराने पर इनकी संख्या 34 थी। इसके बाद बाघों के संरक्षण पर ध्यान दिया गया। साल 1974 में पलामू टाइगर रिजर्व की स्थापना की गयी। इसका क्षेत्रफल 980 वर्ग किलोमीटर है। भारत में पाए जानेवाले लगभग सभी बड़े स्तनधारी प्राणी, मसलन बाघ, हाथी, गौर, तेंदुआ, सोन कुत्ता, सांभर और तेंदुआ पलामू में विद्यमान हैं। कुल मिलाकर पलामू में स्तनधारियों की 47 जातियां हैं। पलामू के खूबसूरत वन, घाटियां और पहाड़ियां एवं वहां के जीव–जंतु बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। देश में बाघों की गणना पहली बार पलामू में ही सन 1932 को हुई थी।

THE EPITOME OF BEAUTY

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

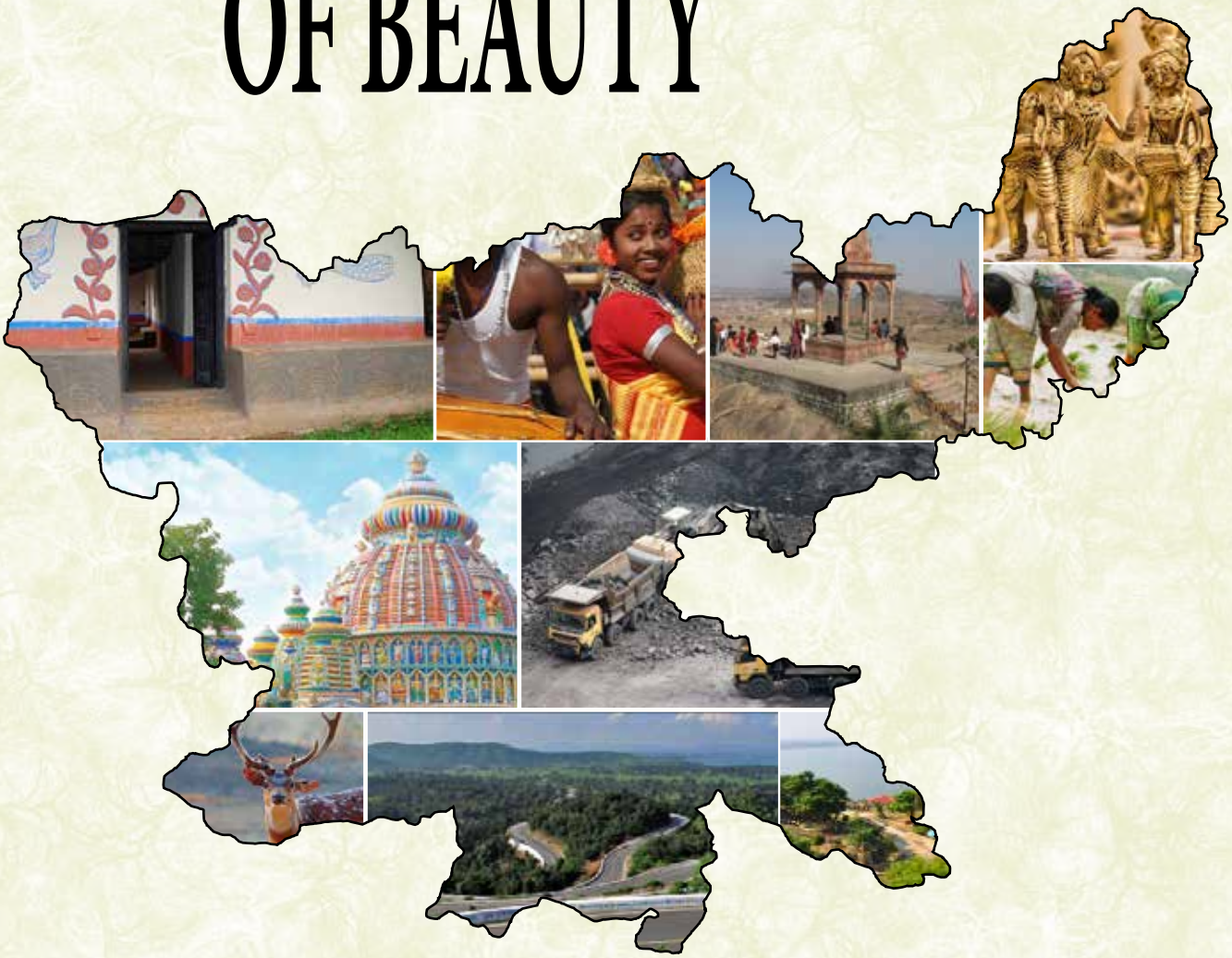

Jharkhand is a land of surprise. Unspoilt and relatively tourist free, the state offers a melting pot of cultures. A discovery of Jharkhand starts at the State Museum in Ranchi, where the ethnographic displays offer an insight into the evolution of its people and traditions. Across the state, you will find artists engaged in handmade woodcrafts, bamboo crafts, Paitkar paintings, and metal works-their legacy passed down generation to generation. Nature smiles upon the state-from national parks and zoological garden to cascading waterfalls, it offers solace to those looking for an escape from the city.

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment | www.twitter.com/visitjharkhand

नगरऊंटारी का बाबा बंशीधर मंदिर

झारखण्ड के गढ़वा जिले के नगरऊंटारी में बाबा बंशीधर का मंदिर है। इसमें सैकड़ों वर्ष पुरानी राधाकृष्ण की मूर्ति है। बंशीधर श्रीकृष्ण की मूर्ति साढ़े चार फीट ऊंची और बत्तीस मन सोने से बनी एक मोहक प्रतिमा है। अभी इसकी कीमत लगभग 2,500 करोड़ रुपए बताई जाती है।

यह प्रतिमा जमीन में गड़े शेषनाग के फन पर निर्मित चौबीस पंखुड़ियों वाले कमल पर विराजमान है। राज परिवार के संरक्षण में यह वंशीधर मंदिर देशी–विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है। कई सालों से यहां प्रतिवर्ष फागुन महीने भर आकर्षक और विशाल मेला लगता आ रहा है।

मंदिर के प्रस्तर लेख और उसके पुजारी स्व. सिद्देश्वर तिवारी की लिखित इतिहास के अनुसार विक्रम संवत 1885 में नगरऊंटारी के महाराज भवानी सिंह की विधवा रानी शिवमानी कुंवर ने इस प्रतिमा को सपने में देखा था। रानी ने एक बार जन्माष्टमी का व्रत किया था। उसी रात भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें दर्शन दिए। भगवान ने कहा कि कनहर नदी के किनारे शिवपहरी पहाड़ी में उनकी प्रतिमा जमीन के नीचे दबी पड़ी है। तुम आकर मुझे यहां से अपनी राजधानी में ले जाओ।

अगले दिन सुबह राजा ने सैनिकों को प्रतिमा को खोजने के लिए भेज दिया। रानी भी सेना के साथ–साथ चली गई। रानी अपनी सेना के साथ उस पहाड़ी पर गईं। पूजा–अर्चना के बाद उनके बताए गए स्थान पर खुदाई शुरू की। खुदाई के दौरान रानी को बंशीधर की अद्वितीय प्रतिमा मिली। रानी इस प्रतिमा को अपने गढ़ में स्थापित कराना चाहती थी। हालांकि जिस हाथी पर रखकर प्रतिमा नगर उंटारी लायी जा रही थी, वह नगर उंटारीगढ़ के मुख्य द्वार पर बैठ गया। लाख कोशिश के बाद भी हाथी वहां से नहीं उठा। तब रानी ने राजपुरोहितों से सलाह कर वहीं पर मंदिर का बनवा दिया। प्रतिमा केवल श्रीकृष्ण की थी, इसलिए बनारस से श्री राधा–रानी की अष्टधातु की प्रतिमा बनवाकर मंगाया गया। उसे भी मंदिर में श्रीकृष्ण के साथ स्थापित कराया गया।

सन् 1930 में इस मंदिर में एक चोरी हुई थी। जिसमें भगवान बंशीधर की बांसुरी और छतरी चोर चुरा के ले गए थे। कहा जाता है कि चोरी करने वाले अंधे हो गए थे। उन्होंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, परन्तु चोरी की हुई वस्तुएं बरामद नहीं हो पायी। बाद में राज परिवार ने दुबारा स्वर्ण बांसुरी और छतरी बनवा कर मंदिर में लगवाया।

पहाड़ी मंदिर

देशभक्तों को दी जाती थी फांसी

मीरा शर्मा

झारखण्ड की राजधानी रांची का पहाड़ी मंदिर। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 2140 मीटर है। रांची रेलवे स्टेशन से 7 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। कभी फांसी टोंगरी नाम से इसे जाना जाता था। फांसी टोंगरी के नाम से इसलिए जाना जाता था, क्योंकि स्वतंत्रता सैनानियों को यहां पर फांसी दी गई थी। आजादी के बाद से ही बलिदानियों के बलिदान को याद करने के लिए यहां

स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराया जाता है। यह मंदिर हमारे देश का एकमात्र मंदिर है, जहां 15 अगस्त और 26 जनवरी को राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' फहराया जाता है।

यह मंदिर धार्मिकता के साथ–साथ देशभक्तों के बलिदान के लिए भी जाना जाता है। कभी टिरीबुरू नाम से जाने जानेवाले इस पहाड़ी बाबा मंदिर का नाम ब्रिटिश हुकूमत के समय फांसी टुंगरी में परिवर्तित हो गया। अंग्रेजों की हुकूमत के दौरान यहां सच्चे देश भक्तों और महान क्रांतिकारियों को फांसी की सजा दी जाती थी।

जब भारत देश अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ, तब आजादी के बाद रांची में पहला तिरंगा इसी स्थान पर फहराया गया था। स्वतंत्रता सेनानी कृष्ण चन्द्र दास ने यहां पर शहीद हुए देश भक्तों की याद और सम्मान में तिरंगा फहराया था। तभी से यह परम्परा बन गई। हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस को यहां पर तिरंगा फहराया जाता है। इस स्थान पर राष्ट्र ध्वज को धर्म ध्वज से ज्यादा सम्मान देते हुए उसे मदिर के ध्वज से भी अधिक ऊंचाई पर फहराया जाता है। इस पहाड़ी बाबा मंदिर में एक शिलालेख लगा है, जिसमें 14 अगस्त 1947 को देश की आजादी संबंधी घोषणा भी अंकित है।

मंदिर के शिखर पर पहुंचने के लिए लगभग 450 सीढ़ियों का सफर करना होता है। ऐसी मान्यता है कि मंदिर में भक्तों की सभी मनोकामना पूर्ण होती है। चोटी पर मंदिर प्रांगण से पूरे रांची शहर का खूबसूरत नजारा दिखाई देता है। पूरी पहाड़ी पर मंदिर परिसर के इर्द–गिर्द विभिन्न भांति के हजार से अधिक वृक्ष हैं। यहां से सूर्योदय और सूर्यास्त का अनुपम सौंदर्य भी देखा जा सकता है। पहाड़ी मंदिर में भगवान शिवलिंग की पूजा की जाती है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार श्रावण माह में यहां बहुत गहमा–गहमी रहती है। श्रद्धालु मंदिर के देवता पर जल धारा चढ़ाते हैं। पहाड़ी पर कई अन्य मंदिर भी बने हुए हैं। इन मंदिरों में नागराज का मंदिर सबसे प्राचीन कहा जाता है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि छोटानागपुर के नागवंशियों का इतिहास यही से शुरू हुआ है।

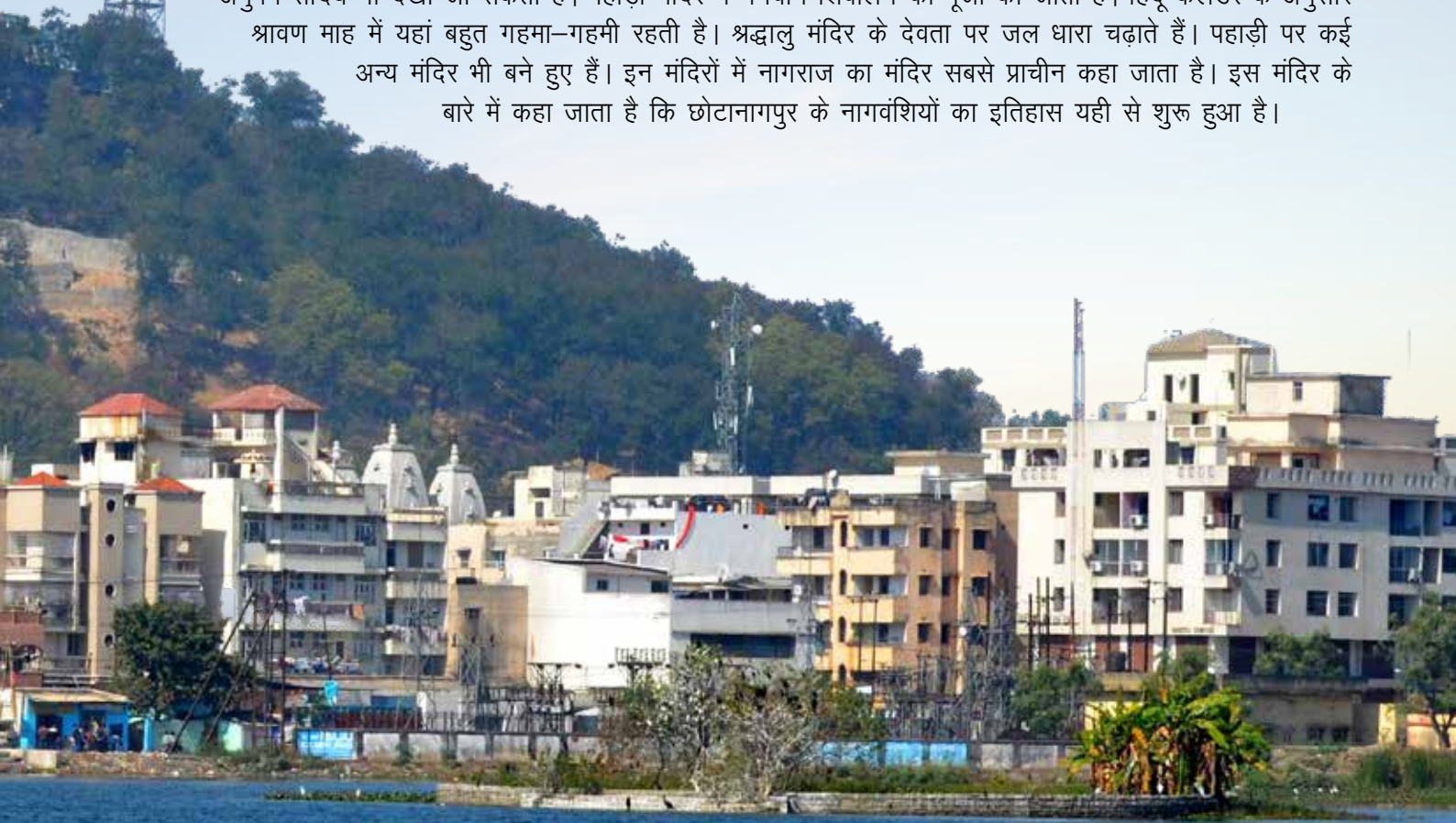

मां छिन्नमस्तिके मंदिर

झारखण्ड की राजधानी रांची से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है रजरप्पा। मां छिन्नमस्तिके मंदिर यहीं है। यहां के भैरवी–भेड़ा और दामोदर नदी के संगम पर स्थित मां छिन्नमस्तिके मंदिर आस्था की धरोहर है। असम के कामाख्या मंदिर के बाद दुनिया के दूसरे सबसे बड़े शक्तिपीठ के रूप में मां छिन्नमस्तिके मंदिर काफी लोकप्रिय है।

रजरप्पा का यह सिद्धपीठ केवल एक मंदिर के लिए ही विख्यात नहीं है। छिन्नमस्तिके मंदिर के अलावा यहां महाकाली मंदिर, सूर्य मंदिर, दस महाविद्या मंदिर, बाबाधाम मंदिर, बजरंग बली मंदिर, शंकर मंदिर और विराट मंदिर हैं। पश्चिम दिशा से दामोदर और दक्षिण दिशा से भैरवी नदी का दामोदर में मिलना मंदिर की खूबसूरती में चार चांद लगा देता है। मंदिर की उत्तरी दीवार के साथ रखे एक शिलाखंड पर दक्षिण की ओर मुख किए माता छिन्नमस्तिके का दिव्य रूप अंकित है। मंदिर में बड़े पैमाने पर विवाह भी संपन्न कराए जाते हैं।

मंदिर में प्रातः काल 4 बजे माता का दरबार सजना शुरू होता है। भक्तों की भीड़ भी सुबह से पंक्तिबद्ध खड़ी रहती है। खासकर शादी–विवाह, मुंडन–उपनयन के लगन और दशहरे के मौके पर भक्तों की 3 से 4 किलोमीटर लंबी लाइन लग जाती है। मंदिर के आसपास ही फल–फूल, प्रसाद की कई छोटी–छोटी दुकानें हैं। आमतौर पर लोग यहां सुबह आते हैं। दिनभर पूजा–पाठ और मंदिरों के दर्शन करने के बाद शाम होने से पूर्व ही लौट जाते हैं।

मां छिन्नमस्तिके मंदिर के अंदर स्थित शिलाखंड में मां की 3 आंखें हैं। बायां पांव आगे की ओर बढ़ाए हुए वे कमल पुष्प पर खड़ी हैं। पांव के नीचे विपरीत रति मुद्रा में कामदेव और रति शयनावस्था में हैं। मां छिन्नमस्तिके का गला सर्पमाला तथा मुंडमाल से सुशोभित है। बिखरे और खुले केश, जिह्वा बाहर, आभूषणों से सुसज्जित मां नग्नावस्था में दिव्य रूप में हैं। दाएं हाथ में तलवार तथा बाएं हाथ में अपना ही कटा मस्तक है। इनके अगल–बगल डाकिनी और शाकिनी खड़ी हैं, जिन्हें वे रक्तपान करा रही हैं। स्वयं भी रक्तपान कर रही हैं। इनके गले से रक्त की 3 धाराएं बह रही हैं।

मंदिर का मुख्य द्वार पूरबमुखी है। मंदिर के सामने बलि का स्थान है। बलि स्थान पर प्रतिदिन औसतन 100–200 बकरों की बलि चढ़ाई जाती है। मंदिर की ओर मुंडन कुंड है। इसके दक्षिण

में एक सुंदर निकेतन है, जिसके पूर्व में भैरवी नदी के तट पर खुले आसमान के नीचे एक बरामदा है। इसके पश्चिम भाग में भंडारगृह है। रुद्र भैरव मंदिर के नजदीक एक कुंड है। नदियों के संगम के मध्य में एक अद्‌भुत पापनाशिनी कुंड है, जो रोगग्रस्त भक्तों को रोगमुक्त कर उनमें नवजीवन का संचार करता है।

मां छिन्नमस्तिके की महिमा की कई पुरानी कथाएं प्रचलित हैं। प्राचीनकाल में छोटानागपुर में रज नामक एक राजा राज करते थे। राजा की पत्नी का नाम रूपमा था। इन्हीं दोनों के नाम से इस स्थान का नाम रजरूपमा पड़ा, जो बाद में रजरप्पा हो गया। एक कथा के अनुसार एक बार पूर्णिमा की रात में शिकार की खोज में राजा दामोदर और भैरवी नदी के संगम स्थल पर पहुंचे। रात्रि विश्राम के दौरान राजा ने स्वप्न में लाल वस्त्र धारण किए तेज मुख मंडल वाली एक कन्या देखी।

उसने राजा से कहा– हे राजन, इस आयु में संतान न होने से तेरा जीवन सूना लग रहा है। मेरी आज्ञा मानोगे तो रानी की गोद भर जाएगी। राजा की आंखें खुलीं तो वे इधर–उधर भटकने लगे। इस बीच उनकी आंखें स्वप्न में दिखी कन्या से जा मिलीं। वह कन्या जल के भीतर से राजा के सामने प्रकट हुई। उसका रूप अलौकिक था। यह देख राजा भयभीत हो उठे।

राजा को देखकर वह कन्या कहने लगी– हे राजन, मैं छिन्नमस्तिके देवी हूं। कलियुग के मनुष्य मुझे नहीं जान सके हैं, जबकि मैं इस वन में प्राचीनकाल से गुप्त रूप से निवास कर रही हूं। मैं तुम्हें वरदान देती हूं कि आज से ठीक नौवें महीने तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी।

देवी बोली– हे राजन, मिलन स्थल के समीप तुम्हें मेरा एक मंदिर दिखाई देगा। इस मंदिर के अंदर शिलाखंड पर मेरी प्रतिमा अंकित दिखेगी। तुम सुबह मेरी पूजा कर बलि चढ़ाओ। ऐसा कहकर छिन्नमस्तिके अंतर्ध्यान हो गईं। इसके बाद से ही यह पवित्र तीर्थ रजरप्पा के रूप में विख्यात हो गया।

एक अन्य कथा के अनुसार एक बार भगवती भवानी अपनी सहेलियों जया और विजया के साथ मंदाकिनी नदी में स्नान करने गईं। स्नान करने के बाद भूख से उनका शरीर काला पड़ गया। सहेलियों ने भी भोजन मांगा। देवी ने उनसे कुछ देर प्रतीक्षा करने को कहा। बाद में सहेलियों के विनम्र आग्रह पर उन्होंने दोनों की भूख मिटाने के लिए अपना सिर काट लिया। कटा सिर देवी के हाथों में आ गिरा व गले से 3 धाराएं निकलीं। वह 2 धाराओं को अपनी सहेलियों की ओर प्रवाहित करने लगीं। तभी से ये छिन्नमस्तिके कही जाने लगीं।

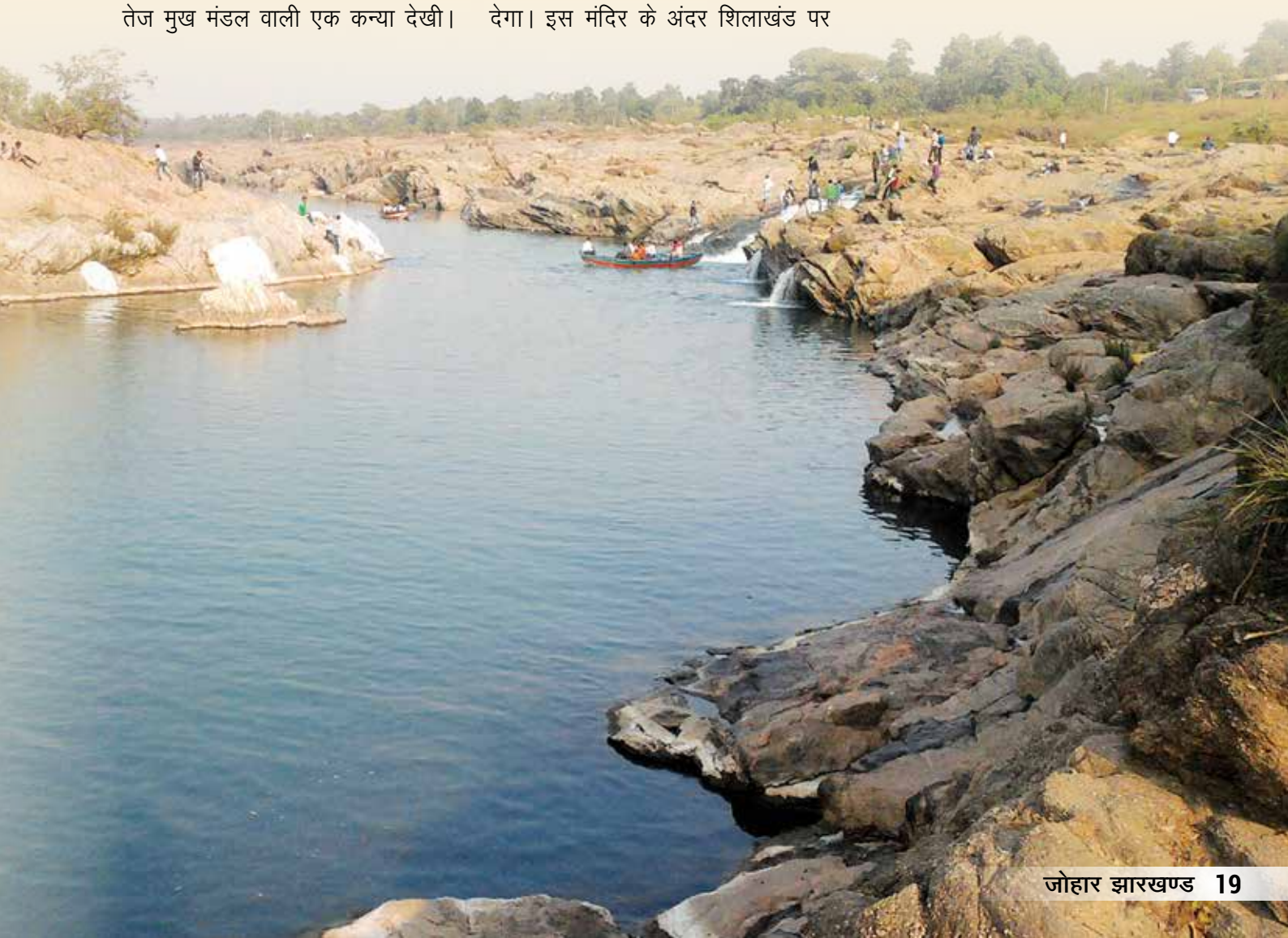

मैथन डैम

झारखंड की कोयला नगरी है धनबाद। यहां से 52 किमी दूर मैथन डैम है। यह दामोदर वैली कारपोरेशन का सबसे बड़ा जलाशय है। इसके आस–पास का सौंदर्य पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। बराकर नदी के ऊपर इसका निर्माण किया गया है। इस बांध का निर्माण लोगों की सुरक्षा के मद्देनजर बाढ़ को रोकने के लिए किया गया था। बांध के नीचे एक पावर स्टेशन का भी निर्माण किया गया है। इसे दक्षिण पूर्व एशिया में अपने आप में आधुनिकतम तकनीक का उदाहरण माना जाता है। इसकी परिकल्पना देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने की थी। इसके पास ही मां कल्याणेश्वरी का एक अति प्राचीन मंदिर भी है। लगभग 65 वर्ग किलोमीटर में फैले इस बांध के पास एक झील भी है। यहां नौकायन और आवासीय सुविधाएं उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त एक मृगदाव और पक्षी विहार भी है। पर्यटक यहां जंगल के प्राकृतिक सौन्दर्य और विभिन्न किस्म के पशु–पक्षियों को देख सकते है। यह बांध 15, 712 फीट लंबा और 165 फीट ऊंचा है। बांध से 60 हजार किलोवाट बिजली का उत्पादन होता है। पर्यटन की दृष्टि से मैथन डैम महत्त्वपूर्ण स्थान है। हर दिन हजारों की संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं। इस शहर की शांति अनायास आकर्षित कर लेती है। यहां आवागमन के लिए दिल्ली और मुंबई सहित देश के कई भागों से रांची और पटना के लिए वायु सेवाएं उपलब्ध हैं। रांची और पटना हवाई अड्डे से बसों और टैक्सियों द्वारा पर्यटक आसानी से धनबाद तक पहुंच सकते हैं। बराकर और कुमारधुबी यहां के निकटतम रेलवे स्टेशन हैं, जो यहां से आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। धनबाद और गोमो इस शहर के मुख्य रेलवे स्टेशन हैं, जो देश के विभिन्न स्थलों से सीधे रेल सेवा से जुड़े हैं। मैथन के लिए धनबाद, आसनसोल तथा बराकर से हर समय बस सेवा उपलब्ध है।

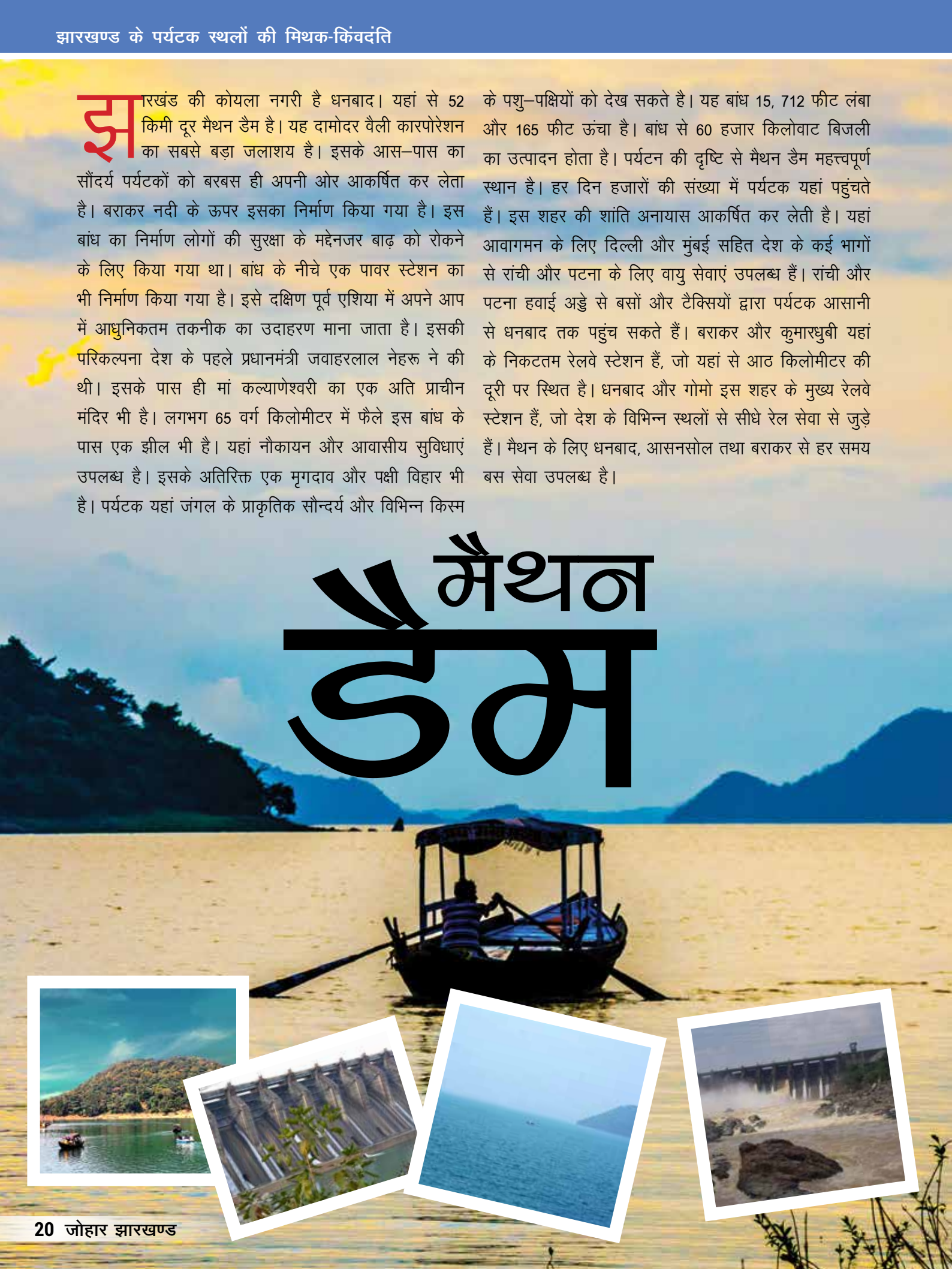

Religious shrines fill your heart with hope. Jharkhand is proud to be housing many different religious shrines that are crowded by devotees all though the year.

Parasnath Temple – Parasnath, the temple town is the highest hill in the Jharkhand, at an elevation of 4480 ft and 35 km from Giridih town. The Parasnath temple is considered to be the most important and sanctified holy places of Jains. The temple complex is not prejudiced, for it welcomes all the sects of the Jains.

Naulakha Mandir - Situated 1.5 kms from Baidyanath Dham is the Naulakha Temple, so called because Rani Charushila of Pathurighat royal family spent 9 lakh rupees on building it. The main deities in the temple are Radha and Krishna. The temple's architecture closely resembles that of Belur Math (Ramakrishna Mission's Headquarters) in West Bengal and its view is architecturally splendor for tourists.

Maa Chhinmastika Devi Mandir - About 100 kms from Ranchi, in Ramgarh district, Rajrappa is a famous temple complex. The presiding deity of the main temple, at the confluence of rivers Damodar and Bhera, is Maa Chhinnmastika. Inside the old temple, the headless statue of the goddess stands over the bodies of Kamdev and Rati on a lotus bed. A large number of devotees throng the place everyday.

Deori Mandir- A temple of Solhabhuji(16 arms) Goddess Durga, it is located on the right side of Tata–Ranchi Highway (NH–33), at 60 kms from the capital city Ranchi and 3 kms from Tamar. It is the only temple in the Jharkhand where the Pujas are done by the Pahans (Tribal Priests) along with the conventional Brahmins

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492, Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
Website : www.jharkhandtourism.gov.in | www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment | www.twitter.com/visitjharkhand

Follow us at : website: jharkhandtourism.gov.in I https://www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment I https://twitter.com/visitjharkhant

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

JHARKHAND
TRAVEL DESTINATION

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment
www.twitter.com/visitjharkhand

मलूटी

मंदिरों का गांव

मीरा शर्मा

झारखण्ड के दुमका जिले में शिकारीपाड़ा के पास एक छोटा सा गांव है मलूटी। यहां हर तरफ प्राचीन मंदिर नजर आता है। मंदिरों की बड़ी संख्या होने के कारण इस क्षेत्र को गुप्त काशी और मंदिरों का गांव भी कहा जाता है। इस गांव का राजा कभी एक किसान हुआ करते था। उसके वंशजों ने यहां 108 भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया।

ये मंदिर बाज बसंत राजवंशों के काल में बनाए गए थे। शुरूआत में कुल 108 मंदिर थे। वर्तमान में 72 मंदिर ही रह गए हैं। इन मंदिरों का निर्माण 1720 से लेकर 1840 के मध्य हुआ था। इसका निर्माण सुप्रसिद्व चाला रीति से की गयी है। ये छोटे–छोटे लाल सूर्ख ईटों से निर्मित हैं। इनकी ऊंचाई 15 फीट से लेकर 60 फीट तक हैं। मंदिरों की दीवारों पर रामायण–महाभारत के दृश्यों का चित्रण भी बेहद खूबसूरती से किया गया है। मलूटी पशुओं की बलि के लिए भी जाना जाता है। यहां काली पूजा के दिन एक भैंस और एक भेड़ सहित करीब 100 बकरियों की बलि दी जाती है।

मलूटी गांव में इतने सारे मंदिर होने के पीछे एक रोचक कहानी है। राजाओं में अच्छे से अच्छा मंदिर बनाने की होड़ सी लग गई। परिणामस्वरूप यहां हर जगह खूबसूरत मंदिर ही मंदिर बन गए। यह गांव मंदिर के गांव के रूप में जाना जाने लगा। मलूटी के मंदिरों की यह खासियत है कि ये अलग–अलग समूहों में निर्मित हैं। भगवान भोले शंकर के मंदिरों के अतिरिक्त यहां दुर्गा, काली, धर्मराज, मनसा, विष्णु आदि देवी–देवताओं के भी मंदिर हैं। इसके अतिरिक्त यहां मौलिक्षा माता का भी मंदिर है, जिनकी मान्यता जागृत शक्ति देवी के रूप में है।

कहा जाता है कि यह गांव सबसे पहले ननकार राजवंश के समय में प्रकाश में आया था। उसके बाद गौर के सुल्तान अलाउद्दीन हसन शाह (1495–1525) ने इस गांव को बाज बसंत रॉय को इनाम में दे दिया था। राजा बाज बसंत शुरुआत में एक अनाथ किसान थे। उनके नाम के आगे बाज शब्द कैसे लगा इसके पीछे भी एक अनोखी कहानी है। एक बार की बात है। सुल्तान अलाउद्दीन की बेगम का पालतू पक्षी बाज उड़ गया। बाज को उड़ता देख गरीब किसान बसंत ने उसे पकड़कर रानी को वापस लौटा दिया। बसंत के इस काम से खुश होकर सुल्तान ने उन्हें मलूटी गांव इनाम में दे दिया। बसंत राजा बाज बसंत के नाम से पहचानेजाने लगे।

टैगोर हिल

ज्योतिंद्रनाथ टैगोर की ध्यानस्थली

झारखण्ड की राजधानी रांची शहर के मोरहाबादी इलाके में स्थित एक पहाड़ी है टैगोर हिल। यह पहाड़ी शहर से चार किलोमीटर की दूरी पर है। इसे 'मोरहाबादी हिल' के नाम से भी जाना जाता है। इसकी चोटी पर एक घर बना हुआ है। टैगोर हिल के नाम से जानी जाने वाली यह पहाड़ी लगभग 300 फीट ऊंची है। टैगोर हिल पर बैठकर कभी कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर के भाई ज्योतिंद्रनाथ टैगोर ध्यान किया करते थे।

इस पहाड़ी का इतिहास टैगोर परिवार से जुड़ा है। इसलिए इसे 'टैगोर हिल' के नाम से जाना जाता है। इस स्थान की नैसर्गिक सुंदरता और शांत मनोरम वातावरण के कारण उन्हें यह स्थान काफी पसंद आया था। टैगोर हिल पर्यटकों के बीच बेहतरीन पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध है।

पर्यटकों को पहाड़ी पर आकर बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि इस पहाड़ी से पूरे रांची के मनोहारी दृश्य देखे जा सकते हैं। चढ़ाई एवं चोटी पर एकांत के कुछ पल बिताने के लिए यह एक बेहतरीन जगह है। पर्यटकों को यह जगह काफी आकर्षित करती है। बड़ी संख्या में लोग यहां घूमने के लिए आते हैं। कुछ पल शांति के आगोश में बिताते हैं।

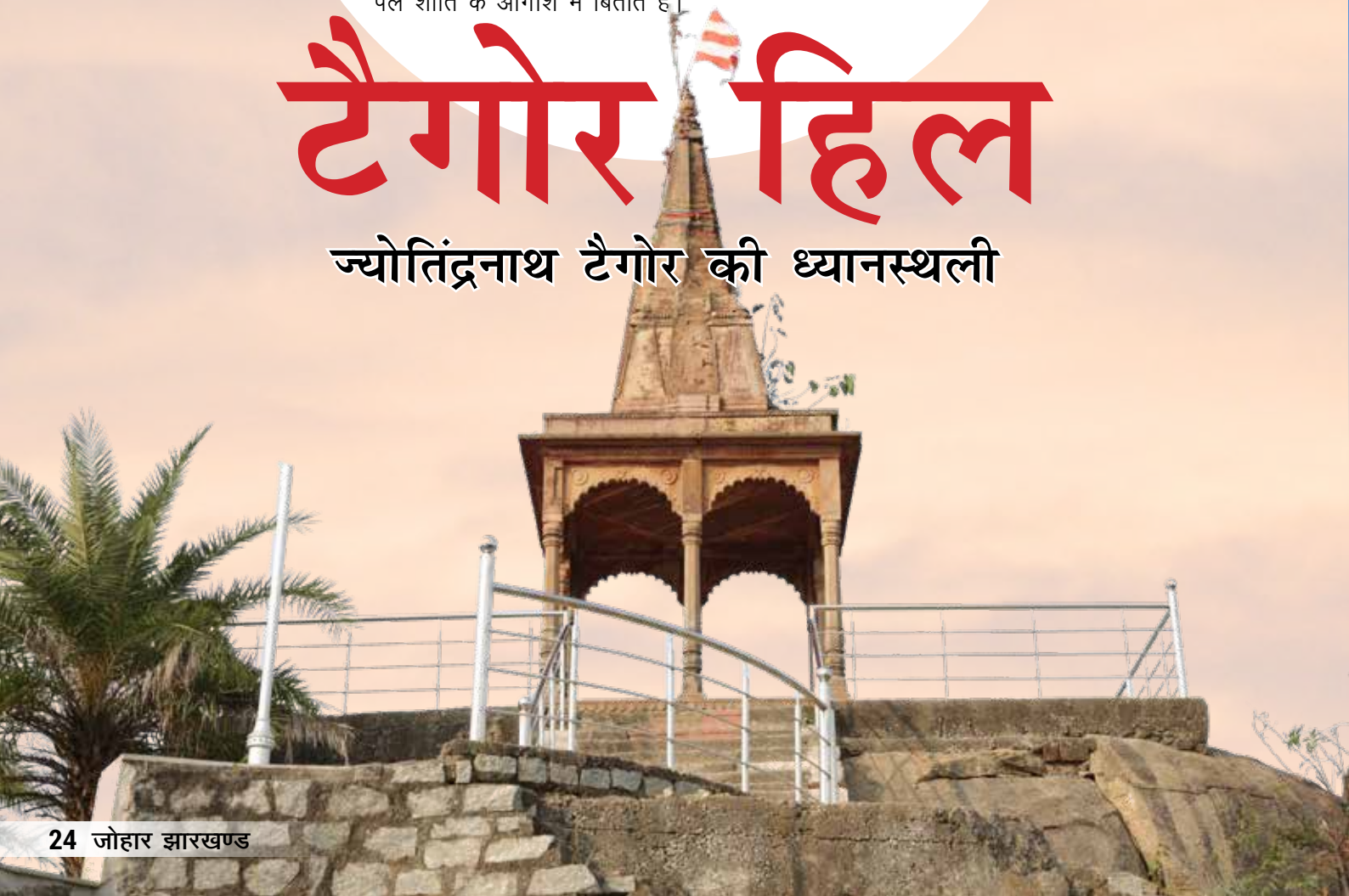

रामरेखा धाम

वनवास के दौरान यहां आए थे भगवान राम

मीरा शर्मा

रामरेखा धाम एक पवित्र स्थान है। यह झारखंड के सिमडेगा जिला मुख्यालय से लगभग 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। स्थानीय लोगों का कहना है कि 14 साल के दौरान वनवास अवधि में भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण ने इस जगह का दौरा किया था। वनवास का कुछ समय यहां गुजारा था। इसका पता कुछ पुरातात्विक संरचनाओं से चलता है।

स्थानीय लोगों के मुताबिक श्रीराम रेखाधाम त्रेतायुग के समय से जुड़ा हुआ है। यहां वह पावन धाम हैं, जहां भगवान राम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वनवास काल के दौरान कुछ समय गुजारी थी। गुफा के अंदर छत में खींची गई लकीर ही रामरेखा कहलाती है। धाम में पौराणिक शिवलिंग, गुप्त गंगा, धनुष कुंड, सीता चौका और सीता चूल्हा, श्याम वर्ण का शंख आदि दर्शनीय हैं। विशालकाय गुफा मंदिर में भगवान राम, लक्ष्मण, माता सीता, भगवान जगन्नाथ, बलभद्र, माता सुभद्रा, शिवलिंग, ब्रह्मालीन रामरेखा बाबा, देवराहा बाबा की प्रतिमा भी स्थापित की गई है। इसके अलावा धाम परिसर में ही शिवालय, गरुड़ स्तंभ, हनुमान मंदिर के साथ-साथ रामरेखा बाबा की समाधि स्थल भी बनाई गई है। जहां दूर-दूर से लोग दर्शनार्थ पहुंचते हैं।

छत्तीसगढ़ सीमा से सटे झारखंड का पावन श्रीरामरेखा धाम के प्रति लोगों की असीम श्रद्धा और आस्था जुड़ी हुआ है। यह धाम जितना पावन है, उतना ही मनोरम भी। हरे-भरे पहाड़ के ऊपर बसे यह रमणिक स्थान लोगों को बरबस अपनी ओर खींच लाता है। धाम में पूजा-अर्चना के लिए सालों भर श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। हालांकि कार्तिक और माघ पूर्णिमा के मौके पर बड़ी संख्या में लोग पहुंचते हैं। कार्तिक पूर्णिमा पर हर साल यहां एक मेला का आयोजन किया जाता है। विभिन्न राज्यों और सभी समुदाय के लोग यहां आते हैं और खुशी के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं। श्रीरामरेखा धाम के संतों का कहना है कि श्रीरामरेखा धाम में त्रेता युग में भगवान राम आए थे। आज भी यहां कण-कण में भगवान के बसे होने का आभास होता है। यहां पर आने से भक्तों की मनोकामना पूरी होती है।

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

WILD LIFE

Flora And Fauna

Jharkhand boasts of a rich variety of flora and fauna, offering visitors the excitement and thrill of a complete jungle experience. Jharkhand tourism offers some superb wildlife tour packages in the Dalma Wildlife Sanctuary, Betla National Park, Hazaribagh Wildlife Sanctuary, Saranda Sal Forest, and Palamu Tiger Reserve. The two most common existences in the wild are the Indian elephant, which also happens to be the state animal, and the spotted deer.

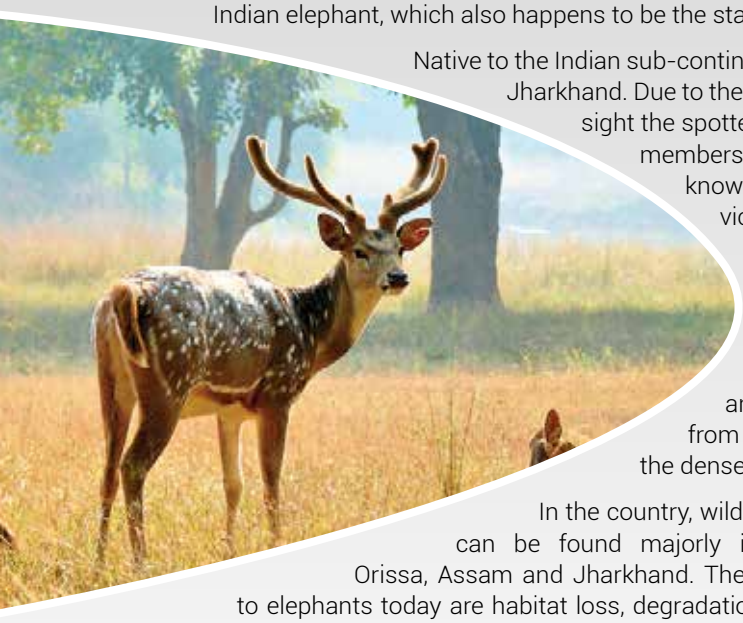

Native to the Indian sub-continent, spotted deer or chital are found in abundance in the forest of Jharkhand. Due to their bubbling activity and prolific presence in the forest, visitors can sight the spotted deer in organised heards, during the forest safaris. With herds members of fice to 40, they graze primarily in the evening and are best known for their alarm calls, activated as they sense a predator in their vicinity. As they inspect the vicinity, they will stand motionless and hear with rapt attention, facing the potential danger. Chitals flee in groups and often hide from their predators in the dense undergrowth.

In the country, wild Indian elephants can be found majorly in West Bengal, Orissa, Assam and Jharkhand. The greatest threats to elephants today are habitat loss, degradation, fragmentation driven by an expanding human population, and deforestation. In Jharkhand, elephants are found in large numbers at the Betla national park, situated in the Palamu District, and Hazaribagh Wildlife Sanctuary, around 89 km north of Ranchi.

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
F.F.P. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi 834004
Secretary Ph.: 0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com

Website : www.jharkhandtourism.gov.in
www.facebook.com/jharkhandtourismdepartment
www.twitter.com/visitjharkhand

पलामू किला

इस्लामिक वास्तुकला और शैली का नमूना

चेरोवंशीय साम्राज्य के वैभवशाली इतिहास का साक्षी है शाहपुर किला। यह किला इस इलाके की शान है। सैलानियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां दो किले हैं। ये इस्लामिक वास्तुकला और शैली में बने हुए हैं। इसमें से एक को 'पुराना किला' और दूसरे को 'नया किला' कहा जाता है। इतिहासकारों के मुताबिक चेरो राजवंश के राजा मेदिनी राय और प्रताप राय ने इस किले का निर्माण कराया था। इसका निर्माण 16वीं सदी के दौरान किया गया था। इन किलों में से एक 401 फीट ऊंचा है।

चेरों राजा खुद को चंद्रवंशी (चंद्रमा के वंश) मानते थे। पलामू के मुख्यालय मेदिनीनगर (डाल्टनगंज) के दक्षिण में कोयल नदी के किनारे बसा है यह किला। स्थानीय लोग इस किले को 'चलानी किला' भी कहते हैं। इतिहास के अनुसार इसका निर्माण 1766–1770 के आसपास कराया गया था। चेरो सत्ता के अवसान काल के दौरान पलामू का साम्राज्य को यहीं से संचालित किया जाता था। सन् 1771 में पलामू किला पर अंग्रेजों के आक्रमण और आधिपत्य होने के कारण शाहपुर किला ही राजा का निवास स्थान बना।

कहा जाता है कि इस किले से सुरंग के रूप में एक गुप्त मार्ग पलामू किला तक जाता था। शाहपुर मुख्य मार्ग पर स्थित इस किले से कोयल नदी के साथ ही मेदिनीनगर के आकर्षक प्राकृतिक नज़ारे को देखा जा सकता है। शाहपुर किला परिसर में अंतिम चेरोवंशीय राजा चुरामन राय और रानी चंद्रावती की मूर्ति स्थापित की गई। पश्चिम बंगाल के चेरो कुल के गंगेश्वर सिंह की मां परइया देवी ने मूर्ति का अनावरण किया था। किला परिसर में पूर्व से ही राजा मेदिनीराय की मूर्ति स्थापित है।

मैकलुस्कीगंज

दुनियां का इकलौता एंग्लो इंडियन गांव

झारखण्ड की राजधानी रांची से उत्तर–पश्चिम में करीब 60–65 किलोमीटर की दूरी पर है मैकलुस्कीगंज। कोलोनाइजेशन सोसायटी ऑफ इंडिया ने इसे 1933 में बसाया था। कुछ ही दिनों में यह 'मिनी लंदन' के रूप मे विख्यात हो गया। यह खासतौर पर एंग्लो–इंडियन समुदाय के लिए बनाया गया था। इस समुदाय का यह पूरी दुनिया में इकलौता गांव है।

अर्नेस्ट टिमोथी मैकलुस्की की पहल पर 1930 के दशक में रातू महाराज से लीज पर ली गई 10,000 एकड़ जमीन पर बसा मैकलुस्कीगंज। चामा, केदल, दुली, कोनका, मायापुर, महुलिया और लपरा जैसे गांवों वाला यह इलाका 365 बंगलों के साथ पहचाना जाता है। इसमें कभी एंग्लो–इंडियन लोग आबाद थे। पश्चिमी संस्कृति के रंग–ढंग और गोरे लोगों की उपस्थिति इसे लंदन का सा रूप देती तो इसे लोग मिनी लंदन कहने लगे।

मैकलुस्कीगंज टिमोथी का सपना था। कोलकाता में प्रॉपर्टी डीलिंग के पेशे से जुड़े टिमोथी जब इस इलाके में आये तब यहां की आबोहवा ने उन्हें मोहित कर लिया। यहां के गांवों में आम, जामुन, करंज, सेमल, कदंब, महुआ, भेलवा, सखुआ और परास के मंजर, फूल या फलों से सदाबहार पेड़ उन्हें खूब भाये। फिर उन्होंने भारत के एंग्लो–इंडियन परिवारों के लिए एक अपना ही चमन विकसित करने की ठान ली।

मैकलुस्की के पिता आइरिश थे। रेल की नौकरी करते थे। नौकरी के दौरान बनारस के एक ब्राह्मण परिवार की लड़की से उन्हें प्यार हो गया। समाज के विरोध के बावजूद दोनों ने शादी की। ऐसे में मैकलुस्की बचपन से ही एंग्लो–इंडियन समुदाय की छटपटाहट देखते आए थे। अपने समुदाय के लिए कुछ कर गुजरने का सपना शुरू से उनके मन में था। वे बंगाल विधान परिषद के मेंबर बने। कोलकाता में रीयल एस्टेट का कारोबार भी खूब ढंग से चलाया।

वर्ष 1930 के दशक में साइमन कमीशन की रिपोर्ट में एंग्लो–इंडियन समुदाय के प्रति अंग्रेज सरकार ने अपनी जिम्मेवारी से मुंह मोड़ लिया। मैकलुस्की को लगा कि इससे तो पूरे एंग्लो–इंडियन समुदाय के सामने ही अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। मैकलुस्की ने तय किया कि वह एंग्लो–इंडियन समुदाय के लिए एक गांव इसी भारत में बनाएंगे। कालांतर में कोलकाता और अन्य दूसरे महानगरों में रहने वाले कई धनी एंग्लो–इंडियन परिवार ने मैकलुस्कीगंज में डेरा जमाया। जमीनें खरीदीं और आकर्षक बंगले बनवाए। यहीं रहने लगे। वर्तमान में भी कुछ परिवार यहां रह रहे हैं।

राजमहल

पुराने ऐतिहासिक इमारतों के हैं अवशेष

राजमहल, साहिबगंज जिला में और गंगा नदी पर तट पर स्थित है। मुगल शासन के दौरान सम्राट अकबर के सेनापति मानसिंह ने सन 1592 में राजमहल शहर को बंगाल की राजधानी बनाया था। यहां बड़ी संख्या में पुराने ऐतिहासिक इमारतों के अवशेष मौजूद हैं। इनमें जामी मस्जिद भी है। यह साहिबगंज जिला मुख्यालय से 32 किलोमीटर और राजधानी रांची से 480 किलोमीटर दूर है। बताया जाता है कि जामी मस्जिद का निर्माण सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में राजा मानसिंह ने कराया था। यह मस्जिद एक ऊंचे स्थल पर निर्मित है, जिसे हदफ के नाम से जाना जाता है। हदफ एक अरबी शब्द है। इसका अर्थ लक्ष्य अथवा धनुष वाण का निशाना होता है। यह राजमहल के नगरीय क्षेत्र का हिस्सा था, जहां 1592 ईस्वी में गंगा नदी के प्रवाह के बदलाव के कारण गौड से राजधानी स्थानांतरित की गई थी।

राजधानी स्थानांतरण का एक अन्य कारण गौड़ में सन 1575 ईस्वी में फैली महामारी भी थी। इस मस्जिद को स्थानीय लोग जामी मस्जिद भी कहते हैं। इसमें एक विशाल प्रार्थना कक्ष है, जो पश्चिम की ओर स्थित है। इसके अंदर एक बड़ा आंगन है। यह ऊंचे अहाते से घिरा हुआ है। मेहराबदार तारवे भीतर की ओर निर्मित हैं। मस्जिद में तीन द्वार हैं, जो उत्तर, दक्षिण और पूर्व दिशा की ओर है। पूर्व दिशा का द्वार मुख्य द्वार है। इस सामने देवडी बनी हुई है। वास्तव में संपूर्ण भवन का माप 76.2 गुना 64 मीटर है। मस्जिद का प्रार्थना कक्ष एक विशाल केंद्रीय हॉल है, जो बाहर से देखने में दो मंजिला प्रतीत होता है। उसमें बनी हुई विशाल खिड़कियां और उसके नीचे निरंतर बने हुए मुंडेर इस बात का आभास देते हैं कि यह दो मंजिला इमारत है। प्रार्थना कक्ष के पश्चिम दीवार पर कई ताकि बने हुए हैं, जिसमें प्रस्तर से कुछ पुष्प आकृतियां बनाई गई हैं। मस्जिद का स्थापत्य कला प्रभावशाली है।

तिलैया डैम

तिलैया डैम कोडरमा हजारीबाग राजमार्ग पर स्थित है। जिला मुख्यालय से इसकी दूरी लगभग 19 किलोमीटर है। दामोदर घाटी निगम द्वारा बनाया गया तिलैया डैम पहला बांध है। यह बराकर नदी पर बनाया गया है। इसपर हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन भी बनाया गया है। यह बांध 1200 फीट लंबा और 99 फीट उंचा है। यह 36 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में एक सुन्दर और आदर्श झील से घिरा हुआ है। इसके निर्माण का मुख्य उद्देश्य बाढ़ को नियंत्रित करना है।

साथ ही, यहां बनाए गए पावर स्टेशन से चार मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। चारों तरफ से यह वनों से घिरा है। इसकी सुन्दर प्राकृतिक परिवेश पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह स्थान बरही से मुख्य सड़क के द्वारा जलाशयों और पहाड़ियों से होकर जाता है।

प्रकृति की मनोरम वादियों में बसे तिलैया डैम की आधारशिला देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 1953 में रखी थी। प्रदेश में रघुवर सरकार के गठन के बाद इसका तेजी से विकास हुआ। पर्यटकों को लुभाने के लिये डबल डेकर बोट और स्पीट बोट की व्यवस्था की गई है। यहां पहुंचने के लिए बेहतर सड़क का निर्माण भी किया गया है। सात दशकों से लगातार सैलानियों को लुभाने वाले इस डैम की वादियों में बंगाल, बिहार, यूपी सहित कई राज्यों से पर्यटक आते हैं। कुछ पल सुकून से बिताकर जिंदगी का लुत्फ उठाते हैं। यहां सालों भर पर्यटकों का आना लगा रहता है। हालांकि अवसर विशेष पर भारी भीड होती है। डैम में नौका विहार का अलग ही मजा है। यहां आने वाले लोग इसका आनंद अवश्य लेते हें।

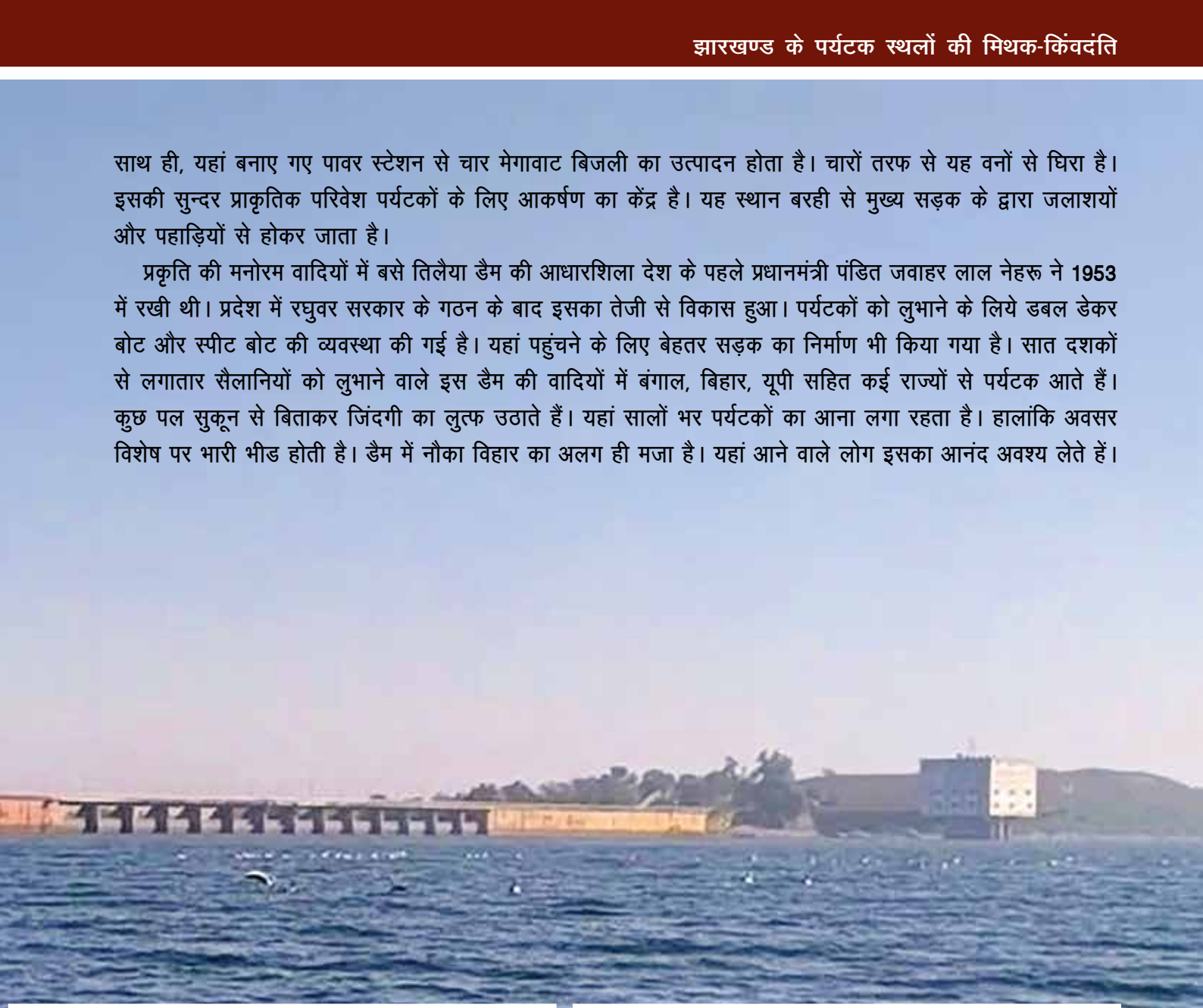

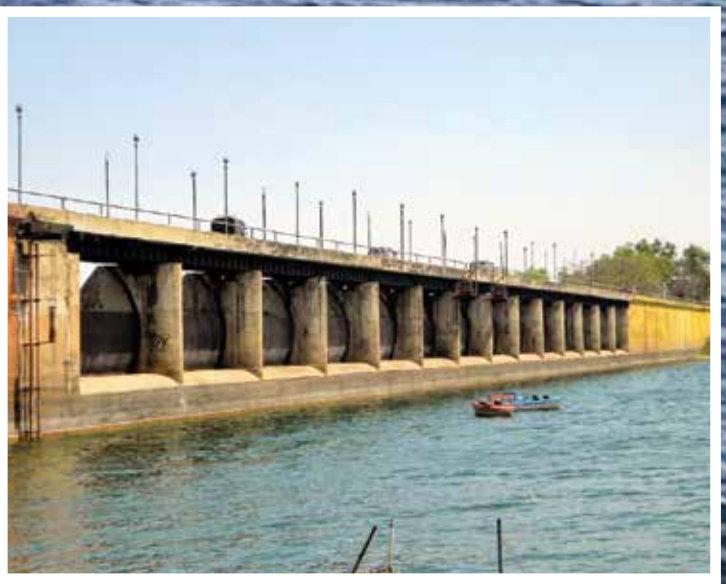

कैथा प्राचीन मंदिर

कैथा प्राचीन शिव मंदिर का इतिहास लगभग 350 साल पुराना है। कहा जाता है कि रामगढ़ राज परिवार के दलेर शाह ने इस गुफानुमा मंदिर को बनवाया था। रामगढ़ राज परिवार के दलेर शाह बहुत बड़े शिवभक्त थे। उनका एक किला रामगढ़ में भी था, जो अभी राजागढ़ के रूप में माना जाता है। शिवभक्ति में हमेशा लीन रहने वाले दलेर शाह ने ही कैथा में इस गुफानुमा शिव मंदिर का निर्माण कराया था। कैथा में शिव मंदिर निर्माण के बाद उन्होंने पांडुलिपि में शिव महिमा पर एक पुस्तक भी लिखी। इसमें शिव मंदिर का जिक्र भी है। कहा जाता है कि कई कारणों से दलेर शाह की पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी थी। ऐसा कहा जाता है कि 1670–71 के दशक में बने इस मंदिर की बनावट में स्थापत्य की अदभुत कला है। इस दो मंजिले मंदिर के निर्माण में बेलनकार गुंबद और उस काल के लखौरी ईंटों का प्रयोग किया गया था। मंदिर का निर्माण अपने आप में अद्भुत कला है।

मंदिर की बनावट को बारीकी से देखने से लगता है कि मंदिर के ऊपरी भाग में शिव मंदिर तो नीचे गुफानुमा फौजी पोस्ट था। मंदिर के नीचे भाग के चारों ओर छोड़े गए छोटे खिड़कीनुमा दीवार से राजा के सिपाही तीर–धनुष और अन्य हथियार के साथ तैनात रहते थे। कैथा मंदिर के निचले भाग से राजागढ़ दामोदर नदी के किनारे करीब तीन किमी तक सुरंग बनी थी। इसी सुरंग से होकर रामगढ़ राजा और उनका परिवार मंदिर में पूजा अर्चना के लिए आता–जाता था।

सुभाष चौक से होकर से बोकारो जाने के रास्ते एनएच–23 के ठीक किनारे कैथा प्राचीन शिव मंदिर है। यहां पूरे सावनभर भक्तों की भीड़ जलाभिषेक के लिए लगती है। हर सोमवार को श्रद्धालु यहां पूजा–अर्चना के लिए पहुंचते हैं। स्थीनीय लोगों के मुताबिक प्राचीन शिव मंदिर में सच्चे मन और भक्ति से जो भी मांगा जाता है, भोलेनाथ उनकी मनोकामना को जरूर पूरा करते हैं।

सुरंग से पूजा करने आते थे राजा

Must watch for visitors in Jharkhand

Nature's gift Latehar unique Megalithic sites

Jharkhand, the land of forest, is blessed with its cultural, spiritual and hostorical richness. Nature has been kind to the state by offering many natural picturesque sites, which have been major attractions for tourists for centuries. Among these places, Netarhat in Jharkhand's Latehar district and Megalithic sites in state's couple of districts have grabbed tourists' eyes from across the globe for many decades.

Netarhat

Located in the lap of nature, the famous hill station is referred to as the 'Queen of Chotanagpur. Netarhat, means nature's heart, is known for its glorious sunrise and sunset during the month of summers.

View of romanticised 'Magnolia Point,' an ideal site for viewing sunset, has been the most fascinating site for the tourists.

As per the Jharkhand Tourism Development Corporation (JTDC), the Magnolia Sunset Point is an epitome of eternal love and sacrifice. Experts say that Magnolia, a British maiden, jumped off along-with her horse, into the unfathomable depths of this vally, after failing to unite with her beloved, a local shepherd.

Netarhat's other attractions are Upper Ghagri falls, Lower Ghaghri falls, Koel View Point, Lodha Falls, the highest waterfall of Jharkhand located some 60 kilometers from Nerathat, and Sadni falls.

Netarhat witnesses huge tourist footfall between october and February. To tap the footfalls, Jharkhand tourism department has ensured several facilities for tourists. This year, JTDC set up 20 Swiss camps with facilities of star hotels in the nature's lap.

How to reach Netarhat?

Air : Ranchi's Birsa Munda Airport is the nearest airport connected by daily flights to major cities of the country. Patna airport is another option, around 250km from Betla.

Rail : Barwadih junction is the nearest railway station, around 109 km away from Netarhat. The station is connected to major cities including Delhi, Amritsar, Varanasi, Allahabad, Kolkata, Bhopal, Patna and Gaya.

Road : Netarhat is located 156 kilometres west of Ranchi and 210 kilometres from Daltonganj.

Where to stay?

Netarhat tourist complex includes a three star hotel, tourist lodges with canteen, log huts and tree houses inside the forest with fully furnished suites.

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi-834004
Secretary Ph.:0651-2400981, Fax : 0651-2400982

Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph.:0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email ID : jtdcltd@gmail.com

www.jharkhandtourism.gov.in

jharkhandtourismdepartment visitjharkhand

मसानजोर दुमका जिले में स्थित एक प्रसिद्ध पिकनिक और पर्यटक स्थल है। यह दुमका से लगभग 31 किलोमीटर की दूरी पर है। मुख्यतः यह जगह जल विद्युत पैदा करने की है। हालांकि समय बीतने के साथ-साथ यह जगह पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय केन्द्र बन गया है। यह स्थल चारों ओर पहाड़ियों और जंगलों से घिरा हुआ है। नीचे की पहाड़ी पर सुंदर उद्यान और नदी के किनारे दो खूबसूरत डाकबंगले स्थित हैं, जो सुंदर एवं आकर्षण का केन्द्र हैं। यह स्थल झारखंड के साथ-साथ सड़क मार्ग से पश्चिम बंगाल के प्रमुख स्थल तारापीठ और रामपुरहाट से जुड़ा हुआ है।

इस डैम का निर्माण कनाडा सरकार के सहयोग से 1956 में कराया गया था। कनाडा की वास्तु शैली में बने होने के कारण इस बांध को कनाडा बांध या पीयरसन बांध के नाम से भी जाना जाता है। सिउड़ी के पास स्थित तिलपारा बैराज भी एक आकर्षक पर्यटन स्थल है। तब यह इलाका अखंड बिहार के हिस्से में था। यह डैम करीब 16650 एकड़ में फैला हुआ है। इसकी ऊंचाई 155 फीट और लंबाई 2170 फीट है। इसे बनाने में लगभग 16 हजार करोड़ रुपये खर्च हुए थे।

मसानजोर

नेतरहाट

सूर्यास्त और सूर्योदय का स्थान

सूर्य का नजदीक से उगना और डूबना देखना हो तो नेतरहाट आएं। नेतरहाट झारखण्ड के लातेहार जिले में स्थित है। यह एक पहाड़ी पर्यटन-स्थल है। समुद्र सतह से इसकी ऊंचाई 3622 फीट है। रांची से यह करीब 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्रकृति ने इसे बहुत ही खूबसूरती से संवारा है। सूर्योदय और सूर्यास्त का नजारा नेतरहाट से करीब 10 किलोमीटर की दूरी पर आकर्षक ढंग से देखा जा सकता है। सूर्योदय और सूर्यास्त के वक्त नाजारा अदभुत होता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो आपके पास ही सूर्य हो।

'छोटानागपुर की रानी' के नाम से नेतरहाट प्रसिद्ध है। नेतरहाट में गर्मी के मौसम में पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है। वैसे तो सालों भर यहां ढंड का मौसम रहता है। घने जंगल के बीच बसे इस जगह की प्राकृतिक सुन्दरता देखते ही बनती है। पर्यटक यहां आने पर प्रसिद्व नेतरहाट विद्यालय, लोध झरना, उपरी घाघरी झरना और निचली घाघरी झरना देखना नही भूलते है। झारखंड का दूसरा सबसे बड़ा फॉल बरहा घाघ (466 फीट) नेतरहाट के पास ही है। नेतरहाट में वन विभाग की अनुमति के साथ शूटिंग भी की जाती है। यहां कुछ भागों में बाघ काफी संख्या में हैं।

नेतरहाट राज्य के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में एक है। इसकी जलवायु जुलाई और अगस्त में बहुत अच्छी रहती है। गर्मियों के दिनों में जलवायु बहुत ठण्ड रहती है। यह पठार जंगलों से घिरा हुआ है। यहां 60 इंच से अधिक वर्षा प्रति वर्ष नहीं होती है। यहां वन में पाइन के पेड़ हैं। सेब और आड़ू के फल यहां हैं, लेकिन बहुत बड़े नहीं हैं। यहां कई फूलों के पेड़ हैं। विशेष रूप से कचनार और कैसिया प्रजाति के।

यह जगह प्रसिद्व नेतरहाट विद्यालय को लेकर भी यह जगह विख्यात है। स्कूल की स्थापना नवम्बर 1954 में हुई थी। राज्य सरकार द्वारा स्थापित और गुरुकुल की तर्ज पर बने इस स्कूल में अभी भी प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नामांकन होता है। यहां के अनेक छात्र ने हर क्षेत्र में इस विद्यालय का नाम रौशन किया है। अभी भी छात्र के आय के हिसाब से ही इस विद्यालय में फीस ली जाती है। हिंदी माध्यम के इस विद्यालय में अग्रेंजी और संस्कृत भी पढ़ाया जाता है।

महादेवशाल

खंडित शिवलिंग की होती है पूजा

झारखंड में एक जगह है गोइलकेरा। यह चाईबासा में स्थित है। यहां एक गांव है बड़ैला। इस गांव की कहानी अलग है। यहां महादेवशाल धाम नाम से एक शिव जी का मंदिर है। इस मंदिर में खंडित शिवलिंग की पूजा होती है। शिवलिंग का आधा हिस्सा कटा हुआ है, फिर भी लोग दूर–दूर से इस मंदिर में पूजा करने आते हैं।

खंडित शिवलिंग की रोचक कथा प्रचलित है। यह कहानी 19 वी शताब्दी के मध्य की है, जब गोइलेकेरा के बड़ैला गांव के पास बंगाल–नागपुर रेलवे द्वारा कोलकाता से मुंबई के बीच रेलवे लाइन बिछाने का काम चल रहा था। इसके लिए जब मजदूर वहां खुदाई कर रहे थे, तब उन्हें एक शिवलिंग दिखाई दिया। मजदूरों ने शिवलिंग देखते ही खुदाई रोक दी। आगे काम करने से मना कर दिया। हालांकि वहां मौजूद ब्रिटिश इंजीनियर रॉबर्ट हेनरी ने इसे बकवास बताते हुए फावड़ा उठाया शिवलिंग पर प्रहार कर दिया, जिससे शिवलिंग दो टुकड़ो में बंट गया। इसका परिणाम भी अच्छा नहीं हुआ। शाम को काम से लौटते वक़्त उस इंजीनियर की रास्ते में ही मौत हो गई।

इंजीनियर की मौत के बाद मजदूरों और ग्रामीणों में दहशत फैल गई। सभी को लगा कि उस शिवलिंग में कोई दिव्य शक्ति है। ऐसे में वहां रेलवे लाइन की खुदाई का जोरदार विरोध होने लगा। बाद में अंग्रेज अधिकारियों को लगा कि यह आस्था और विश्वास की बात है। जबरदस्ती करने के उल्टे परिणाम हो सकते हैं। तब उन्होंने रेलवे लाइन के लिए शिवलिंग से दूर खुदाई करने का फैसला किया। इसके कारण रेलवे लाइन की दिशा बदलनी पड़ी और दो सुरंगो का निर्माण करना पड़ा।

खुदाई में जहां शिवलिंग निकला था, आज वहां देवशाल मंदिर है। खंडित शिवलिंग मंदिर के गर्भगृह में स्थापित है। शिवलिंग का दूसरा टुकड़ा वहां से दो किलोमीटर दूर रतनबुर पहाड़ी पर ग्राम देवी 'मां पाउडी' के साथ स्थापित है। दोनों खंडित शिवलिंग की रोज पूजा–अर्चना होती है। परंपरा के अनुसार पहले शिवलिंग और उसके बाद मां पाउडी की पूजा होती है। भक्तों और श्रद्धालुओं की खूब भीड़ लगी रहती है।

पालकोट में शबरी का आश्रम

झारखण्ड के गुमला के पालकोट में शबरी का आश्रम है। लोगों की मानें तो हनुमान के जन्म स्थली आंजनधाम के अलावा पालकोट प्रखंड में बालि और सुग्रीव का राज था। यहां तक की शबरी आश्रम भी यही है। जहां माता शबरी ने वनवास के दौरान भगवान राम और लक्ष्मण को जूठे बेर खिलाये थे। पंपापुर सरोवर भी यहीं है। यहां भगवान राम ने भाई लक्ष्मण के साथ रुककर स्नान किया था।

प्रचलित कथा के अनुसार रामायण काल में किष्किंधा वानर राजा बालि का राज्य था। यह आज भी पंपापुर (अब पालकोट प्रखंड) में मौजूद है। किष्किंधा ऋष्यमुख की तरह पर्वत था, जो पालकोट प्रखंड के उमड़ा गांव के समीप है। बालि ने अपने भाई सुग्रीव को किष्किंधा से मारकर भागा दिया था। इसके बाद बालि यहां हनुमान और अन्य वानरों के साथ रहने लगे थे।

पंपापुर स्थित गुफा में सुग्रीव छिपा था। किष्किंधा (उमड़ा गांव) से कुछ दूरी पर एक गुफा है। जब बालि ने सुग्रीव को भागा दिया, तब सुग्रीव उसी गुफा में आकर छिप गया। आज भी यह गुफा मौजूद है। इसे सुग्रीव गुफा कहा जाता है। सुग्रीव ने गुफा के अंदर अपनी जरूरत की पूर्ति के लिए सभी वस्तुएं रखी थीं। गुफा के अंदर उस जमाने का बनाया गया जलकुंड भी है। गुफा से दूसरे छोर पर एक सुरंग है।

सुग्रीव गुफा के समीप ही पंपापुर नामक स्थान है। यहां सरोवर भी है। प्रचलित कथा के अनुसार रावण द्वारा माता सीता का हरण करने के बाद राम और लक्ष्मण इसी स्थान पर आकर रुके थे। यहीं पर राम और लक्ष्मण की मुलाकात सुग्रीव से हुई थी। सुग्रीव ने भगवान राम को अपनी पूरी कहानी सुनाई थी। इसके बाद राम के कहने पर सुग्रीव ने बालि को ललकारा और राम ने छिपकर बालि को मार गिराया। वह मर गया. तब लक्ष्मण द्वारा सुग्रीव का अभिषेक कराया गया।

स्थानीय लोगों के अनुसार पंपापुर पहाड़ में शबरी आश्रम भी है। सीता की खोज करते हुए राम और लक्ष्मण शबरी की कुटिया में आये थे। तब शबरी ने बेर खिलाकर उनका आदर सत्कार किया था। आज भी शबरी आश्रम यहां है। भूइयां समाज ने पहाड़ पर स्थित शबरी आश्रम के समीप माता शबरी की मूर्ति और मंदिर बनाने का निर्णय लिया है।

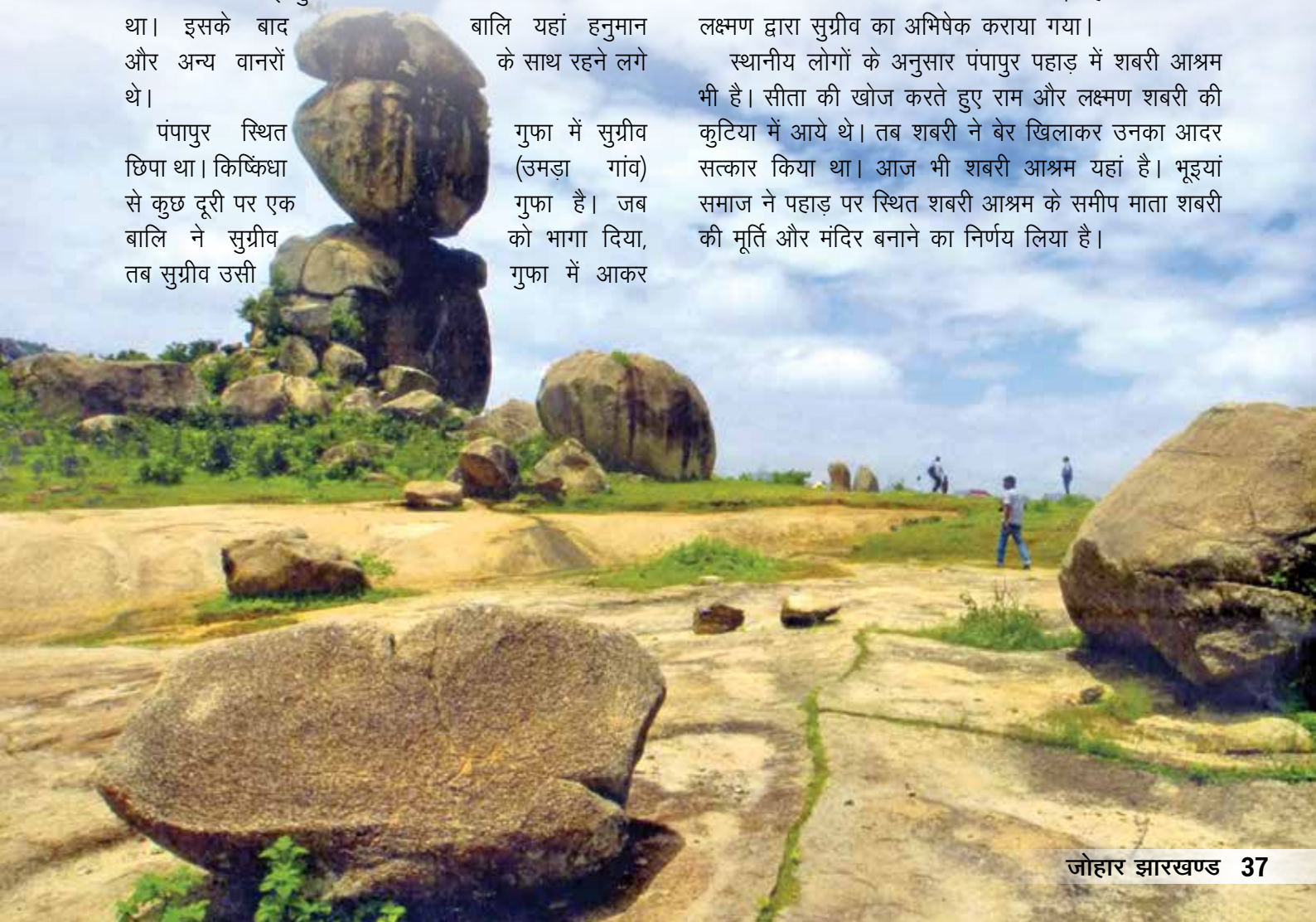

सारंडा

एशिया का सबसे बड़ा शाल का जंगल

झारखण्ड के पश्चिम सिंहभूम जिले से लगभग 70 किलोमीटर दूरी पर सारंडा। रांची से इसकी दूरी करीब 200 किलोमीटर है। यह करीब 820 वर्ग किलोमीटर में फैला सघन वन है। इस जंगल में हरियाली और खूबसूरती का बेजोड़ मेल देखने को मिलता है। सारंडा का कुछ हिस्सा उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ की सीमा से भी सटा है। विहंगम सात सौ पहाड़ियों से घिरा यह वन पूरे एशिया में शाल (सखुआ) वृक्ष की अत्याधिक संख्या के लिए भी जाना जाता है। इसके

अलावा यहां आम, जामुन, बांस, कटहल और पलाश के भी अनेकों पेड़ है। पेड़ो का वर्चस्व यहां कुछ ऐसा है कि सूरज की किरणें भी कई जगहों पर धरती पर नहीं आ पाती है। बताया जाता है कि यहां दिन में भी गाड़ी की बत्ती जलाकर चलना पडता है। पलाश के सुर्ख लाल फूल जब यहां की धरती पर गिर जाने से ऐसा लगता है मानो किसी ने लाल कालीन बिछा दिया हो।

सारंडा में फ्लाइंग छिपकली, रेंगनेवाला कीड़ा है। जंगल में बंदर, चीतल, हाथी, चीता, सांभर और बाघ जंगली भालू , भेड़िया, जंगली बिल्ली, गिलहरी, करैत सांप, कोबरा, अजगर, आदि जानवर देखे जा सकते हैं। किरीबुरू क्षेत्र हाथियों के जंगल के नाम से प्रसिद्ध है। यहां के हाथी विश्व प्रसिद्ध है।

सारंडा में पक्षियों का कलरव पूरे वातावरण में मधुरस घोलती है। इस क्षेत्र को प्रकृति ने दिल खोल कर खूबसूरती बक्शी है। दुर्लभ जड़ी बूटियां भी काफी तादाद में इस क्षेत्र में पाए जाते है। भाग दौड़ की इस जिंदगी में से कुछ सुकून के पल गुजरने बंगाल, ओडिशा सहित देश के विभिन्न भागों से पर्यटक यहां आते है।

किरीबुरू का सूर्योदय और सूर्यास्त पॉइंट प्रसिद्ध है। शाब्दिक अर्थ के अनुसार किरी अर्थात हाथी और बुरु अर्थात जंगल

है। वह जंगल जहां हाथियों की बहुतायत हो, यह किरीबुरू कहलाता है। खुले और रमणिक स्थल और स्वच्छ आबोहवा के बीच उगते सूरज निहारना एक अदभुत एहसास होता है। साथ ही सनसेट पॉइंट से सूरज को पहाड़ो के बीच डूबता देखने के लिए पर्यटकों की भारी भीड़ लगी रहती है। सितंबर–अक्तूबर में सनसेट और सनराइज का दृश्य काफी आकर्षक होता है। दिसंबर में कुहासे के बीच डूबते और उगते सूरज का इंतजार भी अपने आप में अनूठा एहसास है।

सारंडा में साल के वनों से घिरा एक गुफा है। कहते है कुछ वर्ष पहले इसमें एक विशालकाय अजगर का वास था। यह गुफा काफी पुराना है। आज भी अपने प्राकृतिक रूप में विराजमान है। यह गुफा भीतर ही भीतर लगभग एक किलोमीटर तक फैला है। यहां आसपास के वनों में भालू, तेंदुआ, हिरन आदि जानवर आश्रय लेते हैं। इनके पदचिन्ह गुफा के अंदर भी देखे जा सकते है। सारंडा के सबसे ऊंचे पॉइंट को लोयाल्स व्यू के नाम से जाना जाता है। यहां पहुंचना ही अपने आप में एडवेंचरस अनुभूति प्रदान करती है। इसका निर्माण अंग्रेजो के ज़माने में ही हुआ था। इस चोटी से सारंडा की अधिकतम पहाड़ियों को देखा जा सकता है।

गुमला के आंजन धाम में जन्मे थे

रामभक्त हनुमान

मीरा शर्मा

झारखण्ड का गुमला जिला। जिले से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है आंजनधाम। कहा जाता है कि राम भक्त हनुमान का यह जन्म स्थल है। स्थानीय लोग यही मानते हैं। इसको लेकर स्थानीय स्तर पर कई कथायें प्रचलित हैं। आंजन गांव जंगल और पहाड़ों से घिरा है। आंजन एक अति प्राचीन धार्मिक स्थल है। लोगों के मुताबिक यही पहाड़ की चोटी पर स्थित गुफा में माता अंजनी के गर्भ से भगवान हनुमान का जन्म हुआ था। यहां आज भी अंजनी माता की प्रस्तर मूर्ति मौजूद है। अंजनी माता जिस गुफा में रहा करती थीं, उसका प्रवेश द्वार एक विशाल पत्थर से बंद था। इसे कुछ दिनों पहले खुदाई कर खोला गया है। कहा जाता है कि गुफा की लंबाई 1500 फीट से अधिक है। इसी गुफा से माता अंजनी खटवा नदी तक जाती थी। नहाकर लौट आती थी। खटवा नदी में एक अंधेरी सुरंग है, जो आंजन गुफा तक जाता है। हालांकि इस सुरंग में जाने का साहस किसी का नहीं होता है। इसमें खूंखार जानवर और विषैले जीव जंतुओं का घर है। प्रचलित कथा के अनुसार एक बार कुछ लोगों ने माता अंजनी को प्रसन्न करने के लिए अंजनी की गुफा के समक्ष बकरे की बलि दे दी। इससे माता अप्रसन्न हो गई। फिर उन्होंने गुफा के द्वार को हमेशा के लिए चट्टान से बंद कर लिया। अब गुफा खुलने से श्रद्धालुओं के लिए यह मुख्य दर्शनीय स्थल बन गया है।

प्रचलित कथा के अनुसार आंजन पहाड़ पर रामायण युगीन ऋषि–मुनि जन कोलाहल से दूर शांति की खोज में आये थे। यहां ऋषि मुनियों ने सप्त जनाश्रम स्थापित किया था। यहां सभी जरूरी वस्तुएं उपलब्ध थीं। सात जनजातियां निवास करतीं थीं। इनमें शबर, वानर, निषाद, गृद्ध, नाग, किन्नर और राक्षस थे।

आंजन में शिव की पूजा की प्राचीन परंपरा है। अंजनी माता हर दिन एक तालाब में स्नान कर शिवलिंग की पूजा करती थी। यहां 360 शिवलिंग और उतनी ही संख्या में तालाब होने की बात कही जाती है। अभी भी उस जमाने के 100 से अधिक शिवलिंग और दर्जनों तालाब यहां मौजूद है। आंजन में नकटी देवी नामक देवी स्थान भी है। यह चक्रधारी मंदिर की तरह बहुत पुराना है। यहां विशेष अवसरों पर सफेद और काले बकरे की बलि दी जाती है।

अंजनी माता के मंदिर के नीचे सर्प गुफा है। अंजनी माता के दर्शन के बाद लोग सर्प गुफा का दर्शन करते हैं। गुफा में मिट्टी का एक टीला है। वहीं सांप को देखा जाता है। लोगों का मानना है कि यह नागदेव हैं। आंजन गुफा से सटी एक पहाड़ी है, जिसे धमधमिया पहाड़ कहा जाता है। इस पहाड़ का आकार बैल की तरह है। इसमें चलने से एक स्थान पर धमधम की आवाज होती है। कहा जाता है कि माता अंजनी का यह कोषागार था। जहां बहुमूल्य वस्तुएं माता रखती थीं।

गुमला के लोग आज भी अपने आपको हनुमान का वंशज मानते हैं। आंजन में रामनवमी पर्व पर यहां की पूजा पद्धति सभी से भिन्न होती है। पूर्वजों के जमाने से चली आ रही परंपरा के अनुसार गांव के बैगा, पहान और पुजार सबसे पहले पूजा करते हैं। गांव में एक अखाड़ा है। जहां महावीरी झंडा गाड़ा जाता है। हनुमान के पहनावे की तरह बैगा, पहान व पुजार सफेद रंग के धोती पहनकर अखाड़ा में आते हैं। उनके ऊपर का शरीर पूरी तरह खुला रहता है। परंपरा के अनुसार तीन दिनों तक ऐतिहासिक मेला लगता है। चाकडीपा में अस्त्र शस्त्र चालन प्रतियोगिता होती है, जो रात दो बजे तक चलती है। इसमें हर एक गांव के लोग पारंपरिक हथियार के साथ भाग लेते हैं। मेले का इतिहास 100 साल पुराना है। मेले में 30 गांव के लगभग 20 हजार लोग जुटते हैं।

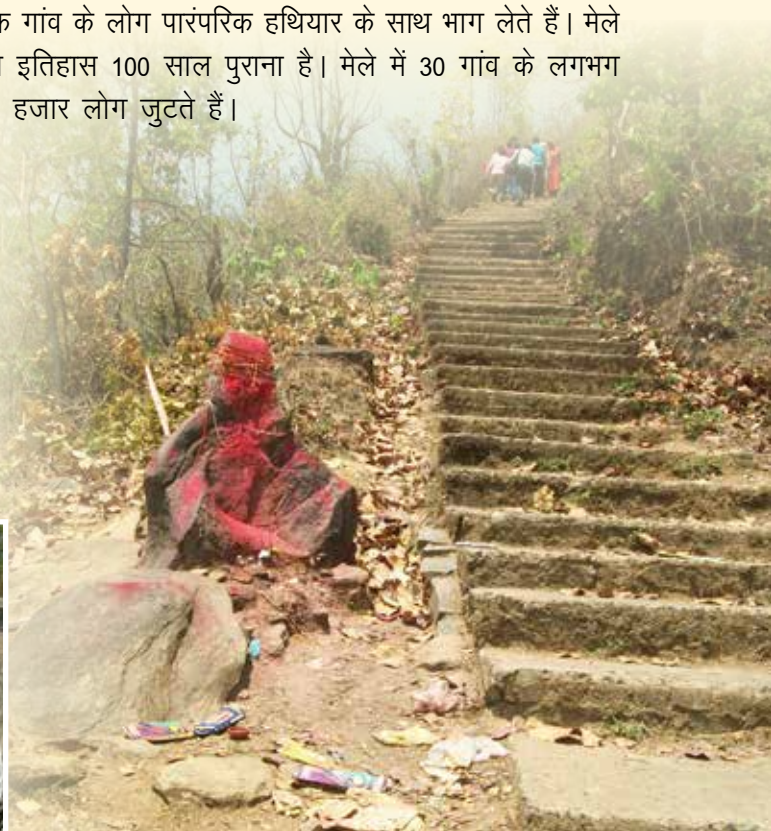

पुराना जेल

भगवान बिरसा मुंडा से जुड़ी यादें

झारखण्ड की राजधानी रांची का सरकुलर रोड। इसी पर स्थित है शहीद निर्मल महतो चौक। इससे सटा है बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार (पुराना रांची जेल)। अब इसे वहां से होटवार शिफ्ट कर दिया गया है। पुराना रांची जेल से राज्य के भगवान बिरसा मुंडा की यादें जुड़ी है। वहां उसके जीवनकाल को महसूस किया जा सकता है। यहीं लंबे कारावास के साथ भगवान बिरसा ने अपने जीवन के अंतिम दिन गुजारे।

इतिहासकारों के मुताबिक सन 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे। बिरसा मुंडा और उनके समर्थकों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। मार्च 1900 में बिरसा मुंडा को चक्रधरपुर के पोड़ाहाट के जंगल में सेंतरा के पास से उनके आदिवासी गुरिल्लों के साथ गिरफ्तार किया गया था। जब उनकी गिरफ्तारी हुई, तब वे सो रहे थे। बिरसा मुंडा के साथ 460 आदिवासी गुरिल्लों को गिरफ्तार किया गया था। उनके खिलाफ 15 आरोप दर्ज किए गए। शेष अन्य गिरफ्तार लोगों में सिर्फ 98 के खिलाफ आरोप सिद्ध हो पाया। बिरसा के विश्वासी गया मुंडा और उनके पुत्र सानरे मुंडा को फांसी दी गई। गया मुंडा की पत्नी मांकी को दो वर्ष के सश्रम कारावास की सजा दी गई। मुकदमे की सुनवाई की शुरुआती दौर में बिरसा मुण्डा ने जेल में भोजन करने के प्रति अनिच्छा जाहिर की। अदालत में तबियत खराब होने की वजह से जेल वापस भेज दिया गया। एक जून को जेल अस्पताल के चिकित्सक ने सूचना दी कि बिरसा को हैजा हो गया है। उनके जीवित रहने की संभावना नहीं है। नौ जून 1900 की सुबह सूचना दी गई कि बिरसा अब इस दुनिया में नहीं रहे। कहते हैं कि बिरसा की हालत 20 मई 1900 को ही बिगड़ने लगी थी। हालांकि उनकी हालत पर ध्यान नहीं दिया गया। उन्हें अदालत ले जाया गया। वहां फिर तबीयत बिगड़ने लगी। नाड़ी तेज चलने लगी। गला सूखने लगा। आंखें अंदर धंस गई थीं। आवाज ठीक से नहीं निकल रही थी। जेल ले आने के बाद दवा दी गई। आठ जून को फिर हालत जस की तस। बार–बार दस्त ने बेदम कर दिया था। नौ जून को सुबह फिर स्थिति नाजुक हो गई। आठ बजे खून की उल्टियां होने लगीं और नौ बजते–बजते बिरसा की सांस टूट गई। हालांकि कई लोगों का मानना है कि अंग्रेजों ने साजिश के तहत उनकी हत्या की थी।

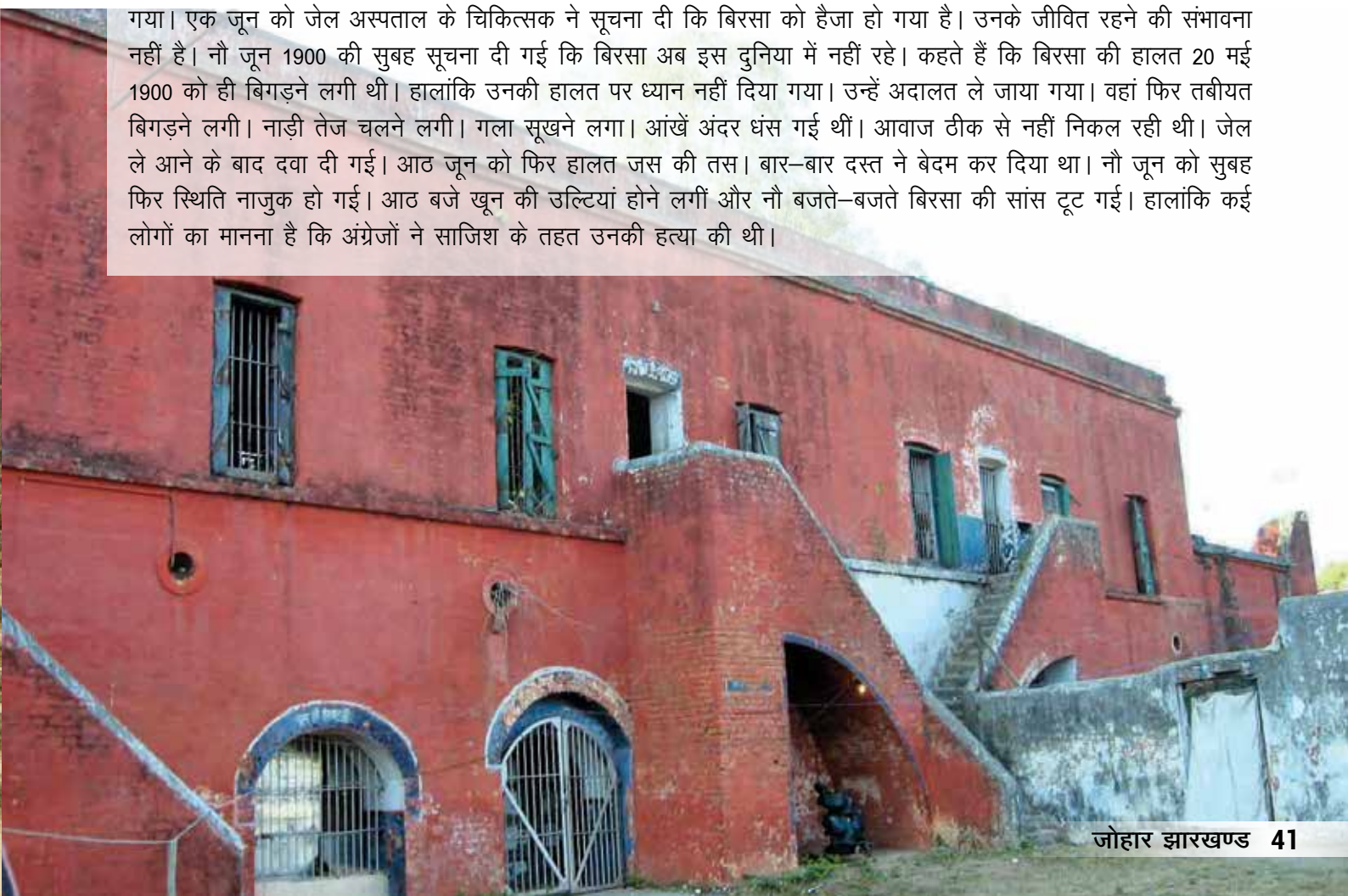

रातू पैलेस

बकिंघम पैलेस की वास्तुकारी की झलक

झारखंड की राजधानी रांची में है रातू महाराज का पैलेस रातू किला। यह रांची–डालटनगंज मार्ग में रातू नामक जगह में है। मुख्य सडक से ही लाल रंग का यह किला दिख जाता है। रांची से इसकी दूरी करीब 12 किलोमीटर है। इसे देश के छोटानागपुर पर शासन करने वाले महाराज प्रताप उदयनाथ शाहदेव ने बनवाया था। महाराजा फणिमुकुट राय नागवंश के पहले महाराजा थे। प्रचलित कथा के अनुसार बचपन में फणिमुकुट राय की रक्षा एक नाग ने फन फैलाकर की थी। इसी वजह से इस राजवंश ने अपना नामकरण नागवंशीय किया।

कथा के अनुसार आज के पिठोरिया के पास स्थित सुतीयांबेगढ़ में 64वें एडी में नागवंशीय शासन की शुरुआत हुई थी। उस समय इस गढ़ में आदिवासी राजा मुदरा मुंडा शासन करते थे। एक दिन राजा मुदरा मुंडा को एक तालाब के पास से एक नवजात शिशु मिला। शिशु की रक्षा एक फनधारी नाग कर रहा था। राजा मुदरा मुंडा इस बालक को अपने साथ ले आए। अपने बच्चे की तरह पाला। बाद में वह बच्चा ही महाराजा फणिमुकुट कहलाया। फणिमुकुट को मुदरा मुंडा ने अपना उत्तराधिकारी घोषित कर महाराजा बना दिया। चूंकि नाग ने इनकी रक्षा की थी, इसलिए इस राजवंश ने अपना नामकरण नागवंशीय किया। महाराजा फणिमुकुट नागवंश के पहले महाराजा बने। वर्ष 1899 में किला को कोलकाता के ब्रिटिश आर्किटेक्ट्स की देखरेख में बनाया गया। यह महल साल 1901 में बनकर तैयार हुआ। महल 22 एकड़ में फैला है। लाल ईंट से बने इस दो मंजिले पैलेस में 103 कमरे हैं। इसमें ब्रिटेन की महारानी के महल बकिंघम पैलेस की वास्तुकारी के कुछ हिस्सों की झलक दिखती है। यहां पर पिछले 113 साल से पारंपरिक दुर्गा पूजा का आयोजन होता रहा है।

महल में कई विंटेज वस्तुएं मौजूद हैं। महाराजा द्वारा बनवाया गया खूबसूरत बगीचा भी है। इसे देखने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं। इतिहासकारों के अनुसार नागवंश दुनिया का ऐसा पहला राजघराना है, जिसने लोगों से लगान नहीं लिया। जनता राजा को उनका खर्च चलाने के लिए पर्व त्योहार और विशेष अवसरों पर स्वेच्छा से सामान दिया करती थी। नागवंशीय राजपरिवार ने कभी भी अपनी स्थाई सेना नहीं बनाई। छोटानागपुर के मुंडा सामंत और यहां के लोग ही युद्ध के समय राजा की तरफ से लड़ते थे।

राजा जगतपाल का किला

अभिशाप ने बनाया खंडहर

झारखण्ड की राजधानी रांची से लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पर रांची–पतरातू मार्ग के पिठोरिया गांव में पुराना राजा जगतपाल सिंह का किला है। यह करीब दो सौ साल पुराना है। किसी जमाने में यह 100 कमरों वाला विशाल महल था। अब खंडहर में तब्दील हो चुका है। स्थानीय लोगों के अनुसार इसके खंडहर में तब्दील होने का कारण किले पर हर साल बिजली गिरना है। आश्चर्यजनक रूप से इस किले पर दशकों से हर साल बिजली गिरती आ रही है। हर साल इसका कुछ न कुछ हिस्सा टूट कर गिर जाता है। लगातार ऐसे होते रहने के कारण यह किला अब पूरी तरह खंडहर हो चुका है।

गांव वालों के अनुसार इस किले पर हर साल बिजली एक क्रांतिकारी द्वारा राजा जगतपाल सिंह को दिए गए श्राप के कारण गिरती है। इतिहासकारों के अनुसार पिठोरिया शुरू से ही मुंडा और नागवंशी राजाओं का प्रमुख केंद्र रहा है। यह इलाका वर्ष 1831–32 में हुए कोल विद्रोह के कारण इतिहास में अंकित है। राजा जगतपाल सिंह ने पिठोरिया का चहुमुखा विकास किया। उसे व्यापार और संस्कृति का प्रमुख केंद्र बनाया। वे वहां की जनता में काफी लोकप्रिय थे। हालांकि उनकी कुछ गलतियों ने उनका नाम इतिहास में खलनायक और गद्दारों की सूची में शामिल करवा दिया।

इतिहासकारों के मुताबिक सिंदराय और बिंदराय के नेतृत्व में आदिवासियों ने आंदोलन किया था। यहां की भौगोलिक परिस्थितियों से अंजान अंग्रेज विद्रोह को दबा नहीं पा रह थे। इसलिए अंग्रेज अधिकारी विलकिंगसन ने राजा जगतपाल सिंह के पास सहायता का संदेश भेजा। राजा ने उसे स्वीकार करते हुए अंग्रेजों मदद की। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों को रोकने के लिए राजा ने पिठोरिया घाटी की घेराबंदी की थी, ताकि क्रांतिकारी अपने मकसद में सफल न हो सके। वे क्रांतिकारियों की हर गतिविधियों की जानकारी अंग्रेज तक पहुंचाते थे। नाराजगी के कारण क्रांतिकारी ठाकुर विश्वनाथ नाथ शाहदेव उन्हें सबक सिखाने पिठोरिया पहुंचे। उन पर आक्रमण किया। बाद में वे गिरफ्तार हो गए। जगतपाल सिंह की गवाही के कारण उन्हें 16 अप्रैल 1858 को रांची जिला स्कूल के सामने कदंब के वृक्ष पर फांसी पर लटका दिया गया। बताया जाता है कि उनकी ही गवाही पर कई अन्य क्रांतिकारियों को भी फांसी पर लटकाने का काम किया गया।

लोगों की मान्यता है कि विश्वनाथ शाहदेव ने जगतपाल सिंह को अंग्रेजों का साथ देने और देश के साथ गद्दारी करने पर श्राप दिया कि आने वाले समय में उनका कोई नामलेवा नहीं रहेगा। उसके किले पर हर साल उस समय तक वज्रपात होता रहेगा, जब तक यह किला पूरी तरह बर्बाद नहीं हो जाता। तब से हर साल पिठोरिया स्थित जगतपाल सिंह के किले पर वज्रपात हो रहा है। इस कारण यह किला खंडहर में तब्दील हो चुका है।

बासुकीनाथ

भगवान शिव से जुडी है कथा

झारखंड में एक स्थान बासुकीनाथ है जो दुमका जिला में स्थित है। यहां बाबा बासुकीनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है। माना जाता है कि देवघर की यात्रा बासुकीनाथ के दर्शन के बिना अधूरी रहती है। दक्षिण निषेध नामक देश में रमणीक मनोहारी दारूक वन में बाबा बासुकीनाथ धाम स्थित है। यहां कभी राक्षसों ने मनोहारी नगर बसाया था। दारूक वन क्षेत्र से गुजरने वाले लोगों को राक्षस कैद कर लिया करता था। इसमें शिव भक्त *सुप्रिय* भी शामिल था। सुप्रिय ने राक्षसों के अत्याचार से मुक्ति के लिए भोलेनाथ की अराधना की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शंकर और पार्वती प्रकट हुए। सुप्रिय को राक्षसों का नाश करने के लिए पशुपातअस्त्र दिया, जिससे सुप्रिय ने राक्षसों का नाश किया।

सुप्रिय बाबा भोलेनाथ और पार्वती से सर्वजन हिताय को लेकर यहां निवास करने की मनोकामना लेकर आराधना में लीन हो गए। भोलनाथ ने सुप्रिय को इसी क्षेत्र में पार्वती के साथ निवास करने का वरदान दिया। बाद में इस दारूक वन में कंदमूल की तलाश में मनुष्य आकर बसने लगे। इसमें बासु नामक एक सदाचारी भी आया। कंदमूल की तलाश के लिए जमीन खोदने के क्रम में वहां खून बहने लगा। यह देख बासु व्याकुल होकर घर चला गया।

उसी समय आकाशवाणी हुई, हे बासु! मैं बाबा बासुकीनाथ हूं। चिंता छोड़ तुम मेरी पूजा–अर्चना करो। आज से लोग बासु नाम से यहां मेरी पूजा करेंगे। बासु ने जमीन से प्रकट भोले शंकर की पूजा अर्चना की और सुख–समृद्धि से संपन्नन हुआ। इस कारण बाबा बासुकीनाथ लिंग का प्रादुर्भाव हुआ। आज हजारों की संख्या में भक्त अपनी मनोकामना को पूर्ण करने हेतु यहां आते हैं।

भोगनाडीह : संथाल विद्रोह के प्रणेता सिदा-कान्हू की जन्म स्थली

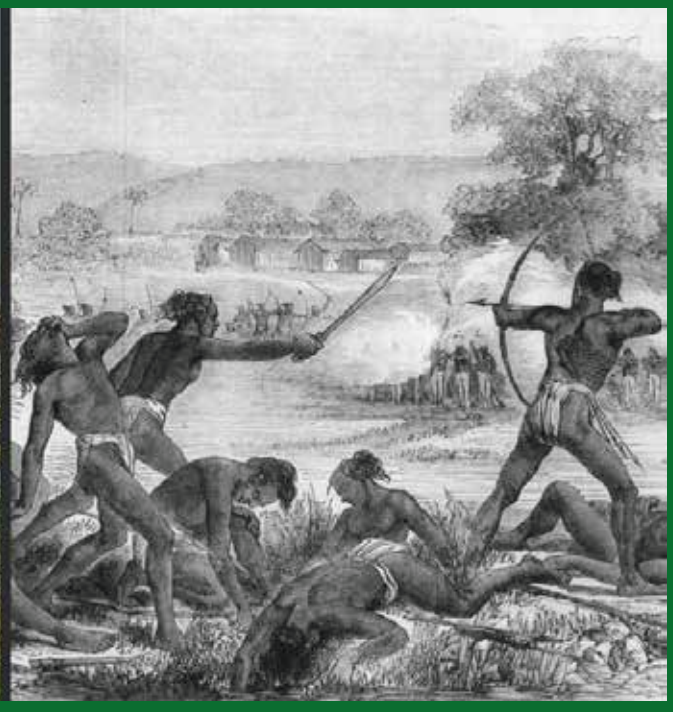

संथाल विद्रोह के प्रणेता सिदो–कान्हू की जन्मस्थली है भोगनाडीह। यह झारखण्ड के संथाल परगना प्रमंडल के साहिबगंज जिले के बरहेट प्रखंड में है। संथाल हूल का नेतृत्व भोगनाडीह निवासी चुन्नी मांझी के चार पुत्रों ने किया। ये सिदो, कान्हू चांद और भैरव थे।

सिदो–कान्हू ने 1855–56 में ब्रिटिश सत्ता, साहुकार, व्यापारी और जमींदारों के खिलाफ विद्रोह की शुरूआत की। इसे संथाल विद्रोह या हूल आंदोलन के नाम से जाना जाता है। संथाल विद्रोह का नारा था 'करो या मरो अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो'। सिदो ने अपनी दैवीय शक्ति का हवाला देते हुए सभी मांझियों को साल की टहनी भेजकर संथाल हूल में शामिल होने का आमंत्रण भेजा। भोगनाडीह में 30 जून 1855 को एक सभा हुई, जिसमें 10,000 संथाल आदिवासी शामिल हुए। सिदो को राजा, कान्हू को मंत्री और भैरव को सेनापति चुना गया। संथाल विद्रोह भोगनाडीह से शुरू हुआ, जिसमें संथाल तीर–धनुष से लैस अपने दुश्मनों पर टूट पड़े।

अंग्रेजों में इसका नेतृत्व जनरल लॉयर्ड ने किया। वे आधुनिक हथियार और गोला बारूद से परिपूर्ण थे। इस मुठभेड़ में महेश लाल और प्रताप नारायण नामक दरोगा की हत्या कर दी गई। इससे अंग्रेजों में भय का माहौल बन गया। संथालों के भय से अंग्रेजों ने बचने के लिए पाकुड़ में मार्टिलो टावर का निर्माण कराया, जो आज भी वहां स्थित है। दोनों ओर से भयंकर मुठभेड़ चला। इसमें संथालों की हार हुई, क्योंकि ये लोग तीर धनुष से लड़ रहे थे। अंग्रेजों के पास आधुनिक हथियार थे। सिदो को पकड़कर पंचकठिया नामक जगह पर बरगद के पेड़ पर फांसी दे दी गई। वह पेड़ आज भी पंचकठिया में स्थित है, जिसे शहीद स्थल कहा जाता है। कान्हू को भोगनाडीह में फांसी दी गई। सिदो–कान्हो आज भी संथाल सहित झारखण्ड के लोगों के दिलों में जिंदा हैं।

संथालों के इस विद्रोह ने अंग्रेजी हुकूमत को जड़ से हिला कर रख दिया था। कार्ल मार्क्स ने इस विद्रोह को 'भारत का प्रथम जनक्रांति' कहा था। आज भी 30 जून को भोगनाडीह सहित पूरे राज्य में हूल दिवस पर वीर शहीद सिदो–कान्हू को याद किया जाता है।

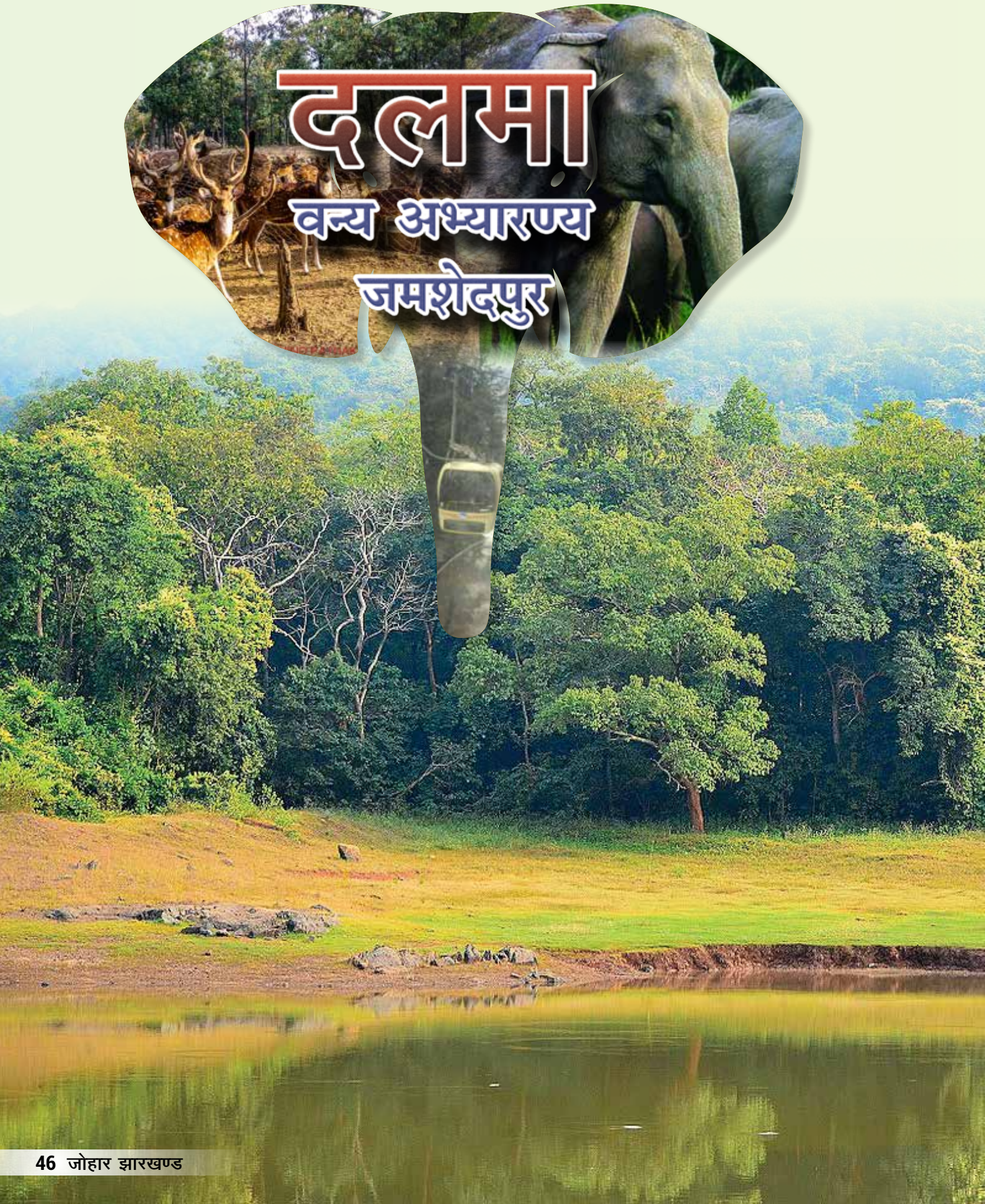
दलमा
वन्य अभ्यारण्य
जमशेदपुर

दलमा वन्य अभ्यारण्य झारखंड के जमशेदपुर में है। यह 3,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित और 193 वर्ग किलोमीटर में फैला है। दलमा अभयारण्य का कोर एरिया 59.27 वर्गमील, बफर एरिया 133.95 और टूरिज्म एरिया 13.94 वर्गमील है। इस अभ्यारण्य का उदघाटन स्वर्गीय संजय गांधी ने किया था। यहां जंगली जानवरों को नजदीक से देखने के लिए कई जगह विशेष रूप से बनाए गए हैं। यहां से पर्यटक आसानी से जंगली जानवरों जैसे
हाथी, हिरण, तेदुंआ, बाघ आदि को देख सकते हैं।

अभ्यारण्य में एक भगवान शिव का एक मंदिर भी है। शिवरात्रि के दिन इसे भव्य तरीके से सजाया जाता है। यहां पूजा अर्चना की जाती है। दलमा अभयारण्य में पक्षियों का भी एक बहुत बडा बसेरा है। यह झारखंड का दूसरा सबसे बड़ा पक्षी अभयारण्य है। इसका नाम विहंग है। इस विहंग पक्षी अभयारण्य में पूरे साल ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, वियतनाम, इंडोनेशिया, बलूचिस्तान आदि देशों के अत्यंत दुर्लभ प्रवासी पक्षियों का आना–जाना लगा रहता है।

दलमा स्थित विहंग पक्षी अभयारण्य में हर साल करीब 84 प्रजातियों के प्रवासी पक्षी पहुंचते हैं। इनमें से कई तरह के बाज, गोल्डन ओरियल, इंडियन ट्री पाई, पैराडाइज फ्लाई कैचर, ग्रे हॉर्न बिल, भारतीय मोर, कई तरह के किंगफिशर, बगुले, ईग्रेट, मैना, कबूतर, रैकेट टेल ड्रोंगो, मैगपाई रॉबिंस आदि की प्रजातियां शामिल हैं। इसके अलावा भारतीय प्रजातियों के पक्षी भी पाए जाते हैं।

दलमा मुख्य रूप से हाथियों का अभयारण्य है। यहां डेढ़ सौ से ज्यादा हाथी हैं। यहां जंगली जानवरों के अलावा कई कीमती लकड़ियां और गुणकारी औषधीय पेड़–पौधे भी हैं। दलमा में हाथी के साथ–साथ सूकर, बंदर, जंगली मुर्गे, चीतल, कोटरा, भालू, खरहा, मोर, गिलहरी, नेवले आदि भी मौजूद हैं।

शिवगादी मंदिर

झारखण्ड का मिनी बाबाधाम

झारखण्ड का दूसरा बाबा धाम (मिनी बाबा धाम) नाम से विख्यात है बाबा गाजेश्वर नाथ धाम 'शिवगादी' मंदिर। राजमहल की पहाड़ियों में मनोरम दृश्यों और गिरते झरने की नैसर्गिक सौंदर्य के बीच एक गिरी गुफा मंदिर है। मंदिर झारखण्ड के साहेबगंज जिले के बरहेट प्रखण्ड से छह किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित है। बाबा गाजेश्वर नाथ का यह मंदिर पहाड़ी की ऊंचाई पर है। श्रद्धालुओं को मंदिर तक जाने के लिए 195 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है। गुफा में स्थित बाबा के आपरुपी पितांबरी शिवलिंग पर ऊपरी चट्टानों से हमेशा जल टपकते रहता है। यह अदभुत और अनुपम है। गाजेश्वर नाथ का शिवलिंग दानवराज गजासूर ने स्थापित किया था। शिव पुराण में गजासूर नामक दैत्या का वर्णन आता है, जो बलशाली महिषासूर का पुत्र था। इसने हजारों वर्षो तक अंगूठे के बल पर खड़े होकर तपस्या कर भगवान शंकर से वर मांगा। वर प्राप्त कर वह अत्यंत बलशाली और दुराचारी हो गया। उसके अत्याचार और भय से ऋषि मुनीख्देवता त्राहिमामदृ त्राहिमाम करने लगे। फिर ऋषि मुनी और देवताओं ने भगवान शंकर की स्तुति की। उनकी करूण पुकार सुनकर भगवान शंकर ने गजासूर का संहार किया। मरते समय भी गजासूर ने भगवान शंकर की स्तुति की, जिससे भगवान शंकर प्रसन्न होकर कहा तेरे द्वारा स्थापित यह शिवलिंग तेरे ही नाम से प्रसिद्धि पाएगा। लोग इसे गाजेश्वर धाम के नाम से जानेंगे।

कहा जाता है कि भगवान शंकर जब नंदी पर सवार होकर गजासूर का वध कर रहे थे, तब नंदी दो पैरो पर खड़ा हो गया। नंदी के उसी दो पैरौ के निशान एक चट्टानों पर पड़ गये। ये आज भी मौजूद है। यह शिवगंगा के नाम से प्रसिद्ध है। एक दूसरी मान्यता के अनुसार महाभारत काल में अर्जुन को भगवान शंकर ने इसी देवाना पर्वत पर दर्शन दिया था।

शिवलिंग के ठीक सामने पार्वती और शिव के वाहन नंदी की प्रतिमा स्थापित है। गुफा के अंदर ही गणेश और कार्तिकेय की मूर्ति स्थापित है। शिवलिंग के बांयी ओर गुफा के अंदर एक और गुफा है। कहा जता है कि इस गुफा मार्ग से पुराने समय में ऋषि उत्तर वाहिनी गंगा राजमहल से जल लाकर बाबा का जलाभिषेक और पूजा अर्चना किया करते थे। वर्तमान समय में इस गुफा के मुख को बंद कर दिया गया है। मंदिर के बाहर दांयी ओर एक दूसरी सीढी, जो शिवगंगा तक गयी है। यहां एक चट्टान पर नंदी बैल के दो पैर के निशान है। खूर रूपी गर्त में सालो भर पानी रहता है, जो शिवगंगा के नाम से जाना जाते है। श्रावण मास में, जो कांवरिया राजमहल गंगा घाट से जल उठाते हैं, वे दुर्गम पहाड़ी मार्ग से शिवगादी मंदिर पहुंचते है।

बाबा गाजेश्वर नाथ धाम मंदिर के गर्भ गृह (गुफा) प्रवेश द्वार के ऊपर सीधा उठा हुआ पर्वतराज एक विशाल गजरा की तरह लगता है। गुफा के प्रवेश द्वार के ऊपर मौजूद दुर्लभ अक्षय वट वृक्ष भारत में बोध गया के बाद यहां पाए गए हैं। इस वृक्ष की जड़े प्रवेश द्वार के बांयी ओर मंदिर की सतह तक फैली हुई है। इसे देखने से लगता है मानो भगवान शंकर के जटाएं लहलहा रही है। यह वृक्ष मनोकामना कल्पतरु (वट वृक्ष) के नाम से प्रसिद्ध है। ऐसी मान्यता है की इस कल्पतरु की जड़ में पत्थर बांधने से बाबा गाजेशवर नाथ अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। इसके बगल में झर–झर गिरते झरने भगवान शंकर के जटा से अविरल बहते हुए गंगा की धारा का अहसास दिलाते हैं। यहां स्नान करने पर शरीर की सारी थकानें मिट जाती है। गिरी गुफा में प्रवेश करने से पहले भक्तों को गुफा के ठीक ऊपर से गिरते झरने के जल से पवित्र कर देता है। लगभग 15वी शताब्दी में यह मंदिर आंशिक रूप से आम लोगों के नजर में आया। 16वीं शताब्दी में राजा मानसिंह द्वारा इस मंदिर में पूजा–अर्चना करने के बाद ये प्रसिद्ध होता चला गया। पूर्व में इस मंदिर तक जाने का रास्ता दुर्गम और कठिन था। संथाल विद्रोह के नायक अमर शहीद सिद्धो दृ कान्हू इस मंदिर में पूजा अर्चना करते थे। तब से यह संथालों की आस्था का प्रमुख केंद्र बन गया।

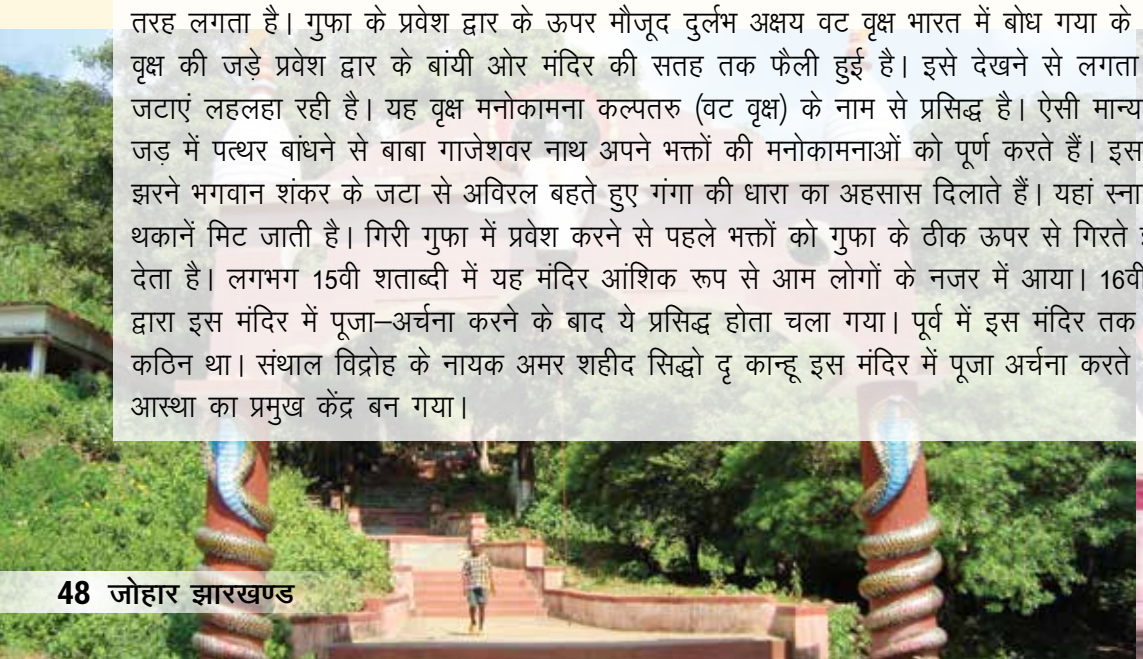

झारखण्ड का पहला गिरिजाघर
जीईएल चर्च

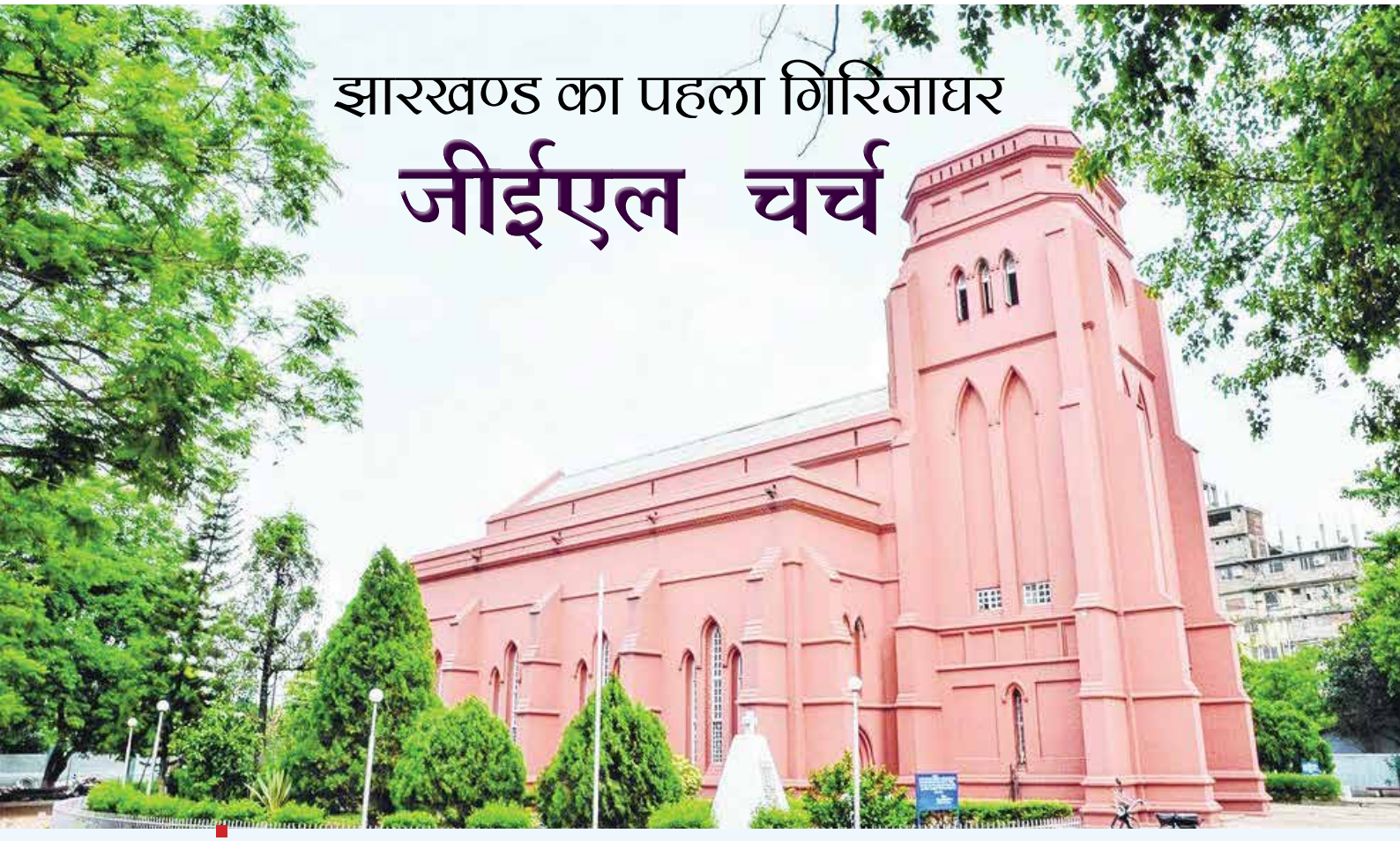

रांची के मुख्य मार्ग पर स्थित जीईएल चर्च झारखंड का पहला गिरिजाघर है। गोथिक शैली में बने इस गिरिजाघर की इमारत देखने लायक है। इसकी स्थापना का श्रेय फादर गोस्सनर को जाता है। इसकी नींव 1851 में डाली गयी और 1855 में इसका संस्कार हुआ। मसीहियों ने यहां 24 दिसंबर की पुण्य रात को पहली बार प्रार्थना की। गिरिजाघर के निर्माण में फादर गोस्सनर ने उस वक्त अपनी ओर से 13 हजार रुपए दिए थे।

जीईएल चर्च से जुड़े पुराने दस्तावेजों और वस्तुओं को संग्रहित करने के लिए चर्च परिसर में ही म्यूजियम बनाया गया है। चर्च द्वारा वर्ष 1872 से घरबंधु पत्रिका निकाली जाती है। घरबंधु के पुराने अंक गोस्सनर थियोलॉजिकल कॉलेज में सुरक्षित रखे गए हैं। इनमें 1872 में घटित प्रमुख घटनाओं पर लेख हैं। जीइएल चर्च के सदस्य कई राज्यों में हैं। चर्च से जुड़ी गतिविधियों की ख़बर उन्हें इसी पत्रिका के माध्यम से मिलती है। इसके पहले संपादक पादरी रेवरेंड एनाट रॉड थे।

ईसाई मिशनरियों के आगमन से इस क्षेत्र में एक बड़ा सांस्कृतिक परिवर्तन और उथल–पुथल शुरू हुआ था। यह सर्वमान्य सत्य है कि उन मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य ईसाईयत का प्रचार करना था। बताया जाता है कि तब आदिवासियों की दशा देखकर वे द्रवित हो उठे थे। यहां के आदिवासियों की अज्ञानता और गरीबी दूर करने की कोशिश की। इसके लिए उनकी भाषा, संस्कृत और परंपरा को अपनाया। रांची शहर के चारों ओर इनके सेवा कार्य क्षेत्रों का विस्तार होता गया। मिशनरियों ने प्राथमिकता के साथ लोगों को शिक्षित करने का संकल्प लिया। शिक्षा और स्वास्थ्य की समर्पित सेवा लोगों के बीच दी। तब आदिवासियों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। आदिवासियों की जमीनें जमींदारों द्वारा लूटी जा रही थी। जमींदारी और सामंती प्रथा चरम पर था। बंधुआ मजदूरी और बेगारी के कारण आदिवासी दबे जा रहे थे। आदिवासियों को मिशनरियों में शोषण से मुक्ति का मार्ग नजर आने लगा। इससे आदिवासी समुदाय का एक बड़ा और महत्वपूर्ण हिस्सा ईसाईयत की ओर आकृष्ट हुआ।

ब्रिटिश शासनकाल में स्थापित इस चर्च ने कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के समय इस चर्च पर भी हमला हुआ था। इसको ध्वस्त करने के लिए तोप से गोले दागे गए थे, किंतु कोई विशेष क्षति नहीं हुई। हमले के निशान आज भी चर्च भवन के पश्चिम भाग में मौजूद हैं। क्रांतिकारियों ने चर्च के अलावा स्कूल भवन और मिशन बंगला और गिरजाघर को क्षतिग्रस्त कर दिया था। विषम परिस्थिति से बचने के लिए चर्च के पूर्वजों ने रांची से भागकर कारो नदी के तीन टापुओं और जंगल में शरण ली थी। उस वक़्त चर्च के हारेलोहर ने अपनी बहुमूल्य चीजों–दस्तावेज को एक लोहे के संदूक में बंद कर पिठोरिया के किसी कुंए में डाल दिया था।

टूटी झरना

जहां शिवलिंग पर खुद गिरता है पानी

झारखण्ड के रामगढ़ जिले में एक मंदिर ऐसा भी है, जहां भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक स्वयं मां गंगा करती हैं। मंदिर की खासियत यह है कि यहां जलाभिषेक साल के बारह महीने और चौबीस घंटे होता है। यह पूजा सदियों से चली आ रही है। माना जाता है कि इस जगह का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। भक्तों के अनुसार यहां पर मांगी गई हर मुराद पूरी होती है। रामगढ़ कैंट इलाके से लगभग 7 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

इस प्राचीन शिव मंदिर को लोग टूटी झरना के नाम से भी जानते है। मंदिर का इतिहास 1925 से जुड़ा हुआ है। इसके बारे में प्रचलित है कि अंग्रेज इस इलाके से रेलवे लाइन बिछाने का काम कर रहे थे। पानी के लिए खुदाई के दौरान उन्हें जमीन के अंदर कुछ गुंबदनुमा चीज दिखाई पड़ा। अंग्रेजों ने इसे जानने के लिए पूरी खुदाई कराई। अंत में ये मंदिर पूरी तरह से नजर आया।

मंदिर के अंदर भगवान भोले का शिव लिंग मिला। उसके ठीक ऊपर मां गंगा की सफेद रंग की प्रतिमा मिली है। प्रतिमा के नाभी से आपरूपी जल निकलता रहता है। यह उनके दोनों हाथों की हथेली से गुजरते हुए शिव लिंग पर गिरता है। मंदिर के अंदर गंगा की प्रतिमा से स्वंय पानी निकलना अपने आप में एक कौतुहल का विषय है।

पानी खुद ब खुद आने की बात अभी तक रहस्य है। कहा जाता है कि भगवान शंकर के शिवलिंग पर जलाभिषेक कोई और नहीं स्वयं मां गंगा करती हैं। यहां लगाए गए दो हैंडपंप भी रहस्यों से घिरे हुए हैं। लोगों का कहना है कि पानी के लिए हैंडपंप चलाने की जरूरत नहीं पड़ती है, बल्कि इसमें से अपने–आप हमेशा पानी नीचे गिरता रहता है। मंदिर के पास से ही एक नदी

गुजरती है, जो सूखी रहती है। हालांकि हैंडपंप से पानी लगातार निकलता रहता है।

लोग दूर–दूर से यहां पूजा करने आते हैं। साल भर मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। भक्त शिवलिंग पर गिरने वाले जल को प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। इसे अपने घर ले जाकर रख लेते हैं। इसे ग्रहण करने के साथ ही मन शांत हो जाता है। दुखों से लड़ने की ताकत मिल जाती है। बताया जाता है कि टूटी झरना मंदिर में वर्ष 1957 में पहली बार शादी की शुरुआत की गई। इसके बाद से सभी मंदिरों में शादी–विवाह जैसे कार्य होने शुरू हो गये।

मंदिर से जुड़े भक्तों का कहना है कि मंदिर में पूर्व में सिर्फ चैत नवमी, मकर संक्रांति और शिवरात्रि की पूजा होती थी। अब हर दिन भक्त मंदिर में आते हैं जल चढ़ाते हैं और पूजा करते हैं।

बोकारो

इस कुंड का अलग ही है रहस्य

आपने देश के बहुत से जल कुंड के रहस्यों के बारे में सुना होगा। प्रचलित कथा के अनुसार कोई कुंड भविष्य में होने वाली आपदाओं का संकेत देता है। कोई कुंड अपने श्रापित जल के लिए जाना जाता है। देश के ऐसे बहुत सारे जल कुंड हैं, जिनके रहस्य आज भी अनसुलझे हैं। हालांकि ये जलकुंड अन्य से अलग है। इसके रहस्य सुनकर आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे। आप ये सोचने को विवश हो जाएंगे कि ऐसा भी हो सकता है क्या? ये रहस्मय कुंड झारखंड के बोकारो जिले में स्थित है। इसकी खास बात यह है कि अगर आप इस कुंड के सामने ताली बजाएंगे तो पानी अपने आप ही निकल आएगा। इस कुंड में पानी इतनी तेजी से निकलता है कि मानो बर्तन में पानी उबल रहा है। इतना ही नहीं, इस कुंड की खासियत है यहां सर्दी में गर्म और गर्मी में ठंडा पानी निकलता है। बोकारो सिटी से 27 किलोमीटर दूरी पर स्थित है यह। सड़क से जगासुर तक जाने के बाद करीब 300 मीटर पैदल चलना पड़ता है। इस अनोखे कुंड में नहाने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं।

इस कुंड पर कई वैज्ञानिकों ने रिसर्च किया कि आखिर यहां पानी आता कहां से है, लेकिन इसके रहस्य से पर्दा नहीं उठ पाया। लोगों का मानना है कि पानी में जो कोई भी मन्नत मागता है, उसकी सारी मन्नतें पूरी हो जाती हैं। इसमें एक बार नहा लेने से कभी भी कोई भी चर्म रोग नहीं होता है। इस कुंड को दलाही कुंड के नाम से जाना जाता है। इस कुंड से निकलने वाला पानी जमुई नामक नाले से होता हुआ गर्गा नदी में जाता है। ये कुंड कंक्रीट की दीवारों से घिरा हुआ है। इस जलाशय का पानी एकदम साफ है। ये औषधीय गुण से भरा हुआ है। कुंड के निकट दलाही गोसाई का देव स्थान है। यहां हर रविवार को श्रद्धालु पूजा–पाठ के लिए आते हैं। वर्ष 1984 से यहां हर साल मकर संक्रांति पर यहां मेला लगता है। लोग स्नान के लिए पहुंचते हैं।

झारखंड में भी है हवामहल

हवामहल सिर्फ जयपुर में ही नहीं है, यह झारखंड के हजारीबाग में भी है। जिले के पदमा पैलेस परिसर में श्रीनगर हवामहल स्थित है। लगभग 22 एकड़ में निर्मित श्रीनगर पैलेस की स्थापत्य कला देखते ही बनती है। यह महल राजा राम नारायण सिंह ने बनवाया था। इसमें कश्मीरी कला का दर्शन किया जा सकता है। इसके साथ एक सुन्दर तालाब भी है, जिसे रानी के लिए बनवाया गया था।

रामगढ़ राज की नींव राजा रामगढ़ कामाख्या नारायण सिंह के पूर्वज बाघदेव और सिंह देव नामक सगे भाइयों ने 1366 में रखी थी। बाद में रामगढ़ राज के लोग बड़कागांव, इचाक होते हुए पदमा में आकर बस गए। राजा बाघदेव सिंह और सिंह देव ने वर्ष 1366 से 1403 तक शासन किया। इसके बाद राजा करेत सिंह 1449 तक, राजा राम सिंह 1537 तक, राजा माधव सिंह 1554 तक और राजा जुगत सिंह ने 1604 तक शासन किया। बाद में राजा हरमित सिंह, राजा दलित सिंह, राजा विष्णु सिंह, राजा मुकुंद सिंह, राजा तेज सिंह और पटेरा नाथ सिंह, राजा मनीनाथ सिंह, राजा सिद्धनाथ सिंह, राजा लक्ष्मीनाथ सिंह, राजा शंभूनाथ सिंह, राजा रामनाथ सिंह, राजा राम नारायण सिंह, राजा लक्ष्मी नारायण सिंह ने गद्दी संभाली। राजा बहादुर कामाख्या नारायण सिंह के कार्यकाल में ही देश आजाद हुआ। वे 1970 तक रहे।

पदमा महल की नींव राजा राम नारायण ने रखी थी। जो उस समय खपरैल हवेली के रूप में थी। जिसके अंश आज भी मौजूद हैं।

त्रिकुट पहाड़

त्रिकुटाचल महादेव मंदिर और ऋषि दयानंद की आश्रम

त्रिकुट पहाड़ देवघर में सबसे रोमांचक पर्यटन स्थल में से एक है। यहां लोग ट्रेकिंग, रोपेवे, वन्यजीवन एडवेंचर्स और एक सुरक्षित प्राकृतिक वापसी का आनंद ले सकते हैं। यह लोकप्रिय पिकनिक स्थान और तीर्थयात्रा के लिए भी एक जगह है। चढ़ाई पर घने जंगल में प्रसिद्ध त्रिकुटाचल महादेव मंदिर और ऋषि दयानंद की आश्रम है। यह आश्रम सम्पदानंदद देव द्वारा स्थापित किया गया था। यहां देवी त्रिशुली को समर्पित एक वेदी भी है। ट्रायकिट हिल्स में तीन चोटियां हैं। सर्वोच्च चोटी सागर स्तर से 2,470 फीट की ऊंचाई तक जाती है। जमीन से लगभग 1,500 फीट पर ट्रेकिंग के लिए आदर्श स्थान बनाती है। तीनों चोटियों में से केवल दो को ट्रेकिंग के लिए सुरक्षित माना जाता है। तीसरी अत्यधिक ढलानों के कारण पहुंच योग्य नहीं है। रोपेवे पर्यटकों को केवल मुख्य चोटी के शीर्ष पर ले जाता है। देवघर बस स्टैंड से त्रिकुट पहाड़ करीब 21 किलोमीटर और जसीडीह जंक्शन से 6 किमी की दूरी पर स्थित है।

बरसात के मौसम में दूर से देखने पर यहां का नजारा कश्मीर की घाटी और वादियों जैसा नजर आता है। सर्दी और गर्मी दोनों में ही देवघर का त्रिकुट पर्वत पर्यटकों को आकर्षित करता है। बारिश के मौसम में बादलों को चूमती यहां की नैसर्गिक छटा तो बस देखते ही बनती है। बादलों की गोद में बैठ कर प्रकृति का आनंद लेने सैलानी भी रोपवे के जरिये पहाड़ की चोटी का सफर करना नहीं भूलते। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2009 में यहां रोपवे का निर्माण कराया गया। प्रत्येक वर्ष बड़ी तादाद में यहां पर्यटक पहुंचते हैं। सावन में देवघर पहुंचने वाले तीर्थयात्री बारिश के मौसम में यहां का आनंद लेने अवश्य पहुंचते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस पर्वत पर कभी रावण आया था। पर्वत पर बंदर भी काफी संख्या में मौजूद हैं।

कोडरमा जिला मुख्यालय स्थित ध्वजाधारी धाम कोडरमा और इसके आसपास के इलाके के लाखों लोगों के धार्मिक आस्था का केंद्र है। प्रकृति की मनोरम वादियों के बीच स्थित यह स्थल कोडरमा के लोगों के लिए बाबानगरी की तरह है। कोडरमा जिला मुख्यालय से महज 500 मीटर दूर रांची–पटना रोड पर यह स्थित है। वैसे तो यहां भक्तों की आवाजाही साल भर रहती है, लेकिन सावन और महाशिवरात्रि के दिनों में यहां मेले जैसा माहौल रहता है। यहां स्थित ध्वजधारी पहाड़ की चोटी और तलहटी पर स्थापित शिवलिंग में लोग जलाभिषेक करते हैं। पहाड़ की चोटी पर स्थित शिवलिंग तक पहुंचने के लिए 777 सीढ़ी चढ़ना पड़ता है।

इस धाम की अपनी ही विशेषता है। भक्तों का मानना है कि सावन में 777 सीढ़ियां चढ़कर भगवान का जलाभिषेक करने वालों की मनोकामना जरूर पूरी होती है। किवदंतियों के अनुसार ब्रह्मपुत्र कर्दम ऋषि का यह तपोभूमि रहा था। उन्हीं के नाम पर इस स्थल का नाम कोडरमा पड़ा। यहां विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा के अलावा शादी, मुंडन समेत कई मांगलिक कार्य के लिए लोग आते हैं। सावन की अंतिम सोमवारी पर यहां 50 हजार से अधिक लोग कांवर पदयात्रा कर आते हैं। महाशिवरात्रि के मौके पर दूसरे राज्यों से भी साधु–संत ध्वजाधारी धाम पहुंचते हैं। धाम के विभिन्न मंदिरों में साधु–संत दिनभर पूजा–अर्चना और ध्यान में रहते हैं। शिवभक्त चैता और अन्य भजन में भी लीन रहते हैं।

ध्वजाधारी धाम

ब्रह्मपुत्र कर्दम ऋषि का तपोभूमि

हरिहर धाम में शिवलिंग बनाने में लगे 30 साल

65 फीट है ऊंचा

हरिहर धाम झारखण्ड के गिरिडीह के बगोदर में स्थित है। भगवान शिव की पूजा–अर्चना और अपने भव्य मंदिर को लेकर यह मशहूर है। हरिहर धाम चट मंगनी पट ब्याह के लिए भी प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण शिवलिंग के रूप में किया गया है। यह विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग माना जाता है। इसकी ऊंचाई 65 फीट है। 25 एकड़ में फैला यह मंदिर नदी से घिरा हुआ है। इस बड़े शिवलिंग के निर्माण में 30 साल लगे थे। पूरे देश से लोग श्रावण मास की पूर्णिमा को इस मंदिर में आते हैं। इसके अलावा पर्यटक, साल भर यहां आते रहते हैं। यहां पूरे श्रावण मास कांवरिये भी भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए पहुंचते हैं।

हरिहर धाम के बारे में कहा जाता है कि यह एक ऐसा मंदिर है, जहां होने वाली हजारों शादियां हर दूसरे वर्ष अपना ही रिकॉर्ड तोड़ देती हैं। अब यहां बड़े घरानों के लोग शौक से बड़ी तादाद में बेटे–बेटियों की शादी के लिए पहुंचने लगे हैं। पहले मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के लोग आडम्बर रहित और खर्चीली शादियों से बचने के लिए यहां ब्याह रचाने आते थे। हरिहर धाम की लोकप्रियता अब शादी ब्याह के निपटारे को लेकर लगातार बढ़ा है। सैकड़ों किलोमीटर दूर से लोग यहां ब्याह रचाने आने लगे हैं। यहां मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहारों में महाशिवरात्रि शामिल है।

jharkhand tourism
Nature's hidden jewel

Baidyanath Dham

Parasnath

Rajrappa Temple

Bhadra Kali Temple

Holy Jharkhand

Baidyanath Dham
Hosts Kamna Linga of Lord Shiva and is the centre of annual pilgrimage in month of Sharvana when more than 30 lakh people from across the country pour holy water of Ganga for with fulfilment.

Parasnath
Sanctum Sanctorum of Jain where 21 of 24 Tirthankaras attained nirvana.

Rajrappa Temple
One of the 51 shakti peeths of India, one of the most revered temples in india.

Bhadra Kali Temple
At Itkhori on the banks of river Bhaduli in Chatra, where Jaina, Buddhist and Hindu traditions mingle to create a unique mytho-fusion, a rare and real Budhha destiny, very near to Bodhgaya. It has a unique sculptural style of its own which the archaeologists have dubbed 'Itkhori Style'.

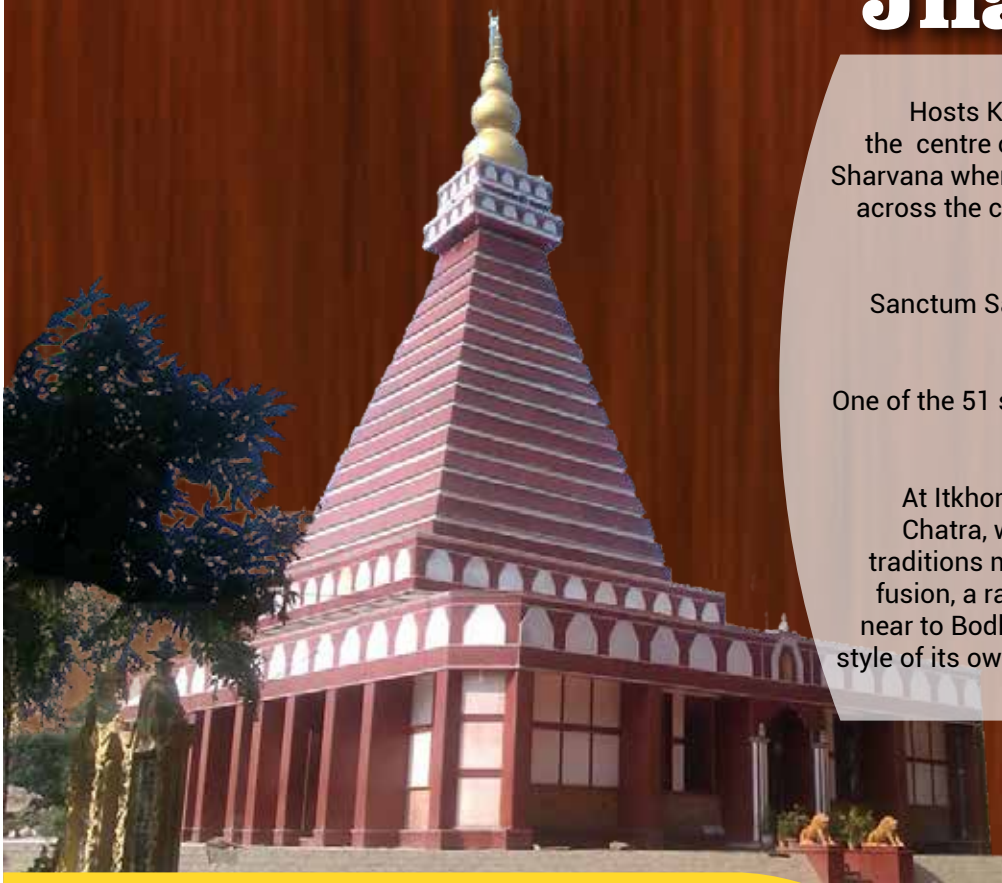

DEPARTMENT OF TOURISM
GOVERNMENT OF JHARKHAND
M.D.I. Building, 2nd Floor, Dhurwa, Ranchi-834004
Secretary Ph.:0651-2400981, Fax : 0651-2400982

Email : govjharkhandtourism@gmail.com
Director Ph.:0651-2400493, Fax : 2400492
Email : dirjharkhandtourism@gmail.com
JTDC Email ID : jtdcltd@gmail.com

www.jharkhandtourism.gov.in

jharkhandtourismdepartment visitjharkhand

A Showpiece of Wildlife Magic

Undulating hills, vast woodlands, fascinating wildlife and habitats rich with endemic species - this is what the jungles of Jharkhand is bestowed with. One can savor the great experience of viewing many rare categories of animals and birds in renowned national park, wildlife sanctuaries and tiger reserves of the destination.

The wildlife in Jharkhrand is extremely vivid, offering a high level of thrill and jungle experience for travellers from all across the globe. They can get a panorarha of this rich variety of wildlife in its dense forest Cover.

Of Jharkhand's total recorded forest area, Reserved Forests constitute 18.58 percent, Protected Forests 81.28 percent, andUnclassed Forests 0.14 percent. As per State of Forest Report of Forest Survey of India, forest cover in Jharkhand is 22,977 sq. km. which is 28.82 percent of the state's total geographical area.* The total forest and tree cover put together, it constitutes about 32.48 percent of the geographical area of the state against the national average of 23.81 percent.

Jharkhand, rightfully called the land of Forests', has one National Park covering huge area and 11 wildlife sanctuaries.

451 (09-18) Annapurna Press 0651-2331800
e-mail : appranchi.1969@gmail.com